राधास्वामी

मासिक समाचार पत्रिका

संत संदेश

वर्ष : 6 अंक : 78 15 अक्तूबर 2003

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना 45
3. सतगुरु की सेवा भाग-II (महर्षि शिवव्रत लाल जी) 46
4. अनमोल वचन 47
5. ज्ञान-सार 47
6. स्वास्थ्य स्तम्भ (औषधि प्रयोग) 48
7. सत्संग सार 49
8. सतगुरु कृपा 51
9. कहानी 53

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-285094 (दिनोद आश्रम)
वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org
इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग
भिवानी कैसेट क्रमांक..... 87
दिनांक 1.8.92
समय .....रात्रि

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों, मैं विद्वान नहीं हूं। न मैं कोई पढ़ा लिखा हूं। न मुझे हिन्दी की चिन्दी करनी आती है। मैं तो अपने सतगुरू की डियूटी बजाता हूं। कई भाई बहुत प्रश्न करते हैं। प्रश्न तो उसी भाई को करना चाहिए, जिसे परमार्थ की चाह है। जिसे हार जीत का शौक है, झगड़ा बाजी करने का शौक है। उसके लिए तो प्रश्न जरूर हो जाता है। मैंने भिवानी में एक बार एक बात सुनी थी। संत विनोबा जी आए थे। उनसे किसी ने एक प्रश्न किया। उन्होंने कहा—भाई साहब! प्रश्न तो हल नहीं होगा क्योंकि महात्मा गांधी से किसी ने प्रश्न किया था। महात्मा जी ने कहा—भाई साहब शास्त्रार्थ में तो शस्त्र अर्थ हो जाया करते हैं। तू कैसा शास्त्रार्थ करेगा? तू तेरा काम कर और मैं मेरा काम कर लूंगा। अगर तू तेरे काम में पूर्ण उतर गया तो तू जीत गया और मैं पूर्ण उतर गया तो मैं जीत गया। यही बात है कि मैं शास्त्रार्थ करने वाले से घबराता हूं पर डरता नहीं। अगर कोई परमार्थी होता है तो कोई परवाह नहीं। मेरा दिल खुश होता है। अगर कोई हार जीत वाला होता है तो मैं सोचता हूं कि यह बिमारी कहां से आ गई? प्रश्न तो उसी का होता है जिसे अपने घर जाने का चाव है। उसे प्रश्न करने की जरूरत भी नहीं रहती है। मैं अपनी बातें बताता हूं। मेरी छोटी उम्र थी। मैं महात्माओं

के पास बहुत गया हूं पर मेरी प्रारब्ध ऐसी थी कि मुझे अगर कोई महात्मा सुल्फा पीता हुआ मिल गया तो मैं फिर नहीं गया। शराब पीता मिल गया या पता लग गया कि वह मांस खाता है तो मैंने कभी उसका मुंह नहीं देखा। मैं ये सोचता था कि ये तो जुल्मी है। ऐसा कई चीजों के बारे में मेरा ख्याल था। यह मेरे वश की बात नहीं थी। मेरी प्रारब्ध ही ऐसी थी। पर मैंने किसी की निंदा भी नहीं की। मैंने बड़े–बड़े साधु देखे। नाम लेने के लिये मैं बहुत घूमा। कहीं माला फेरी। कहीं गायत्री जपी, कहीं आरतियां उतारी। बहुत ही घूमा। कहते हैं–

दौड़त–दौड़त दौड़िया, जहां तक मन की दौड़।
दौड़ थकी मन थिर हुआ वस्तु ठौड़ की ठौड़।।
घर में है सूझत नहीं लानत ऐसी जिंद।
नानक इस संसार को हुआ मोतियां बिंद।।

किसी की सूई अपने घर में गुम हो गई। घर में अंधेरा था। वहां तो उसने देखा नहीं। बाहर चांद की रोशनी थी। वहां आकर ढूंढ़नी शुरू कर दी। किसी ने पूछा–भाई, क्या तलाश कर रहे हो? उसने कहा–हमारी सूई गुम हो गई है। उसने पूछा–कहां गुम हुई थी? उसने कहा–घर में गुम हुई थी। उसने पूछा–घर की गुम हुई सूई यहां कैसे मिलेगी? उसने उत्तर दिया कि यहां रोशनी है। पर सूई तो उसकी घर में ही गुम हुई थी। इसलिए कहा है–

वस्तु कहीं खोजै कहीं, किस विधि आवे हाथ।
कहैं कबीर तब पाइए, भेदी लीजे साथ।।
भेदी लीन्हा साथ, दीन्हा पंथ लखाय।
कोटि जनम का पंथ था पल में पहुंचा जाय।।

प्रेमियो! मैं किसी चीज का खंडन नहीं करता हूं। कबीर साहब का यह शब्द ही ऐसा था। काफी लोग तो इस पर एतराज भी करते होंगे। पर कबीर साहब चारों युगों के संत थे। वे पूर्ण

पुरुष थे। उन्होंने कोई भी गलत बाते नहीं कही। उन्होंने यही कहा–

जो देखा सो बैल बना और बैल पशु के रूपा।

सारा संसार ही बैल बना फिरता है। मैं भी बैल बना फिरता था। किस तरह? मैं अपने गांव में एक साधु की मूर्ति बनवाकर उसकी पूजा किया करता था। वह साधु न मेरे बाप ने देखा और न मेरे दादा ने देखा और न ही मैंने देखा। पर बात यह भी ठीक है कि तीन चीजें वक्त की ही काम देती हैं। वक्त का संत सतगुरू, वक्त का हाकिम और वक्त का हकीम। ये तीन चीजें वक्त की ही काम देती है। अगर इनका वक्त चला जाता है, फिर भी इनको मानते हो, तो खाली रह जाओगे। अगर आज कोई अंग्रेजों की बड़ाई करता है तो कुछ नहीं मिलेगा। आज तो वक्त के हाकिम की बड़ाई करोगे तो कुछ ले रहोगे। हालांकि अंग्रेज बहुत बड़े थे और वे बहुत दिन राज भी कर गए परन्तु यदि आज धन्वंतरी वैद्य के गीत गाता है तो कुछ नहीं मिलेगा। अगर बिमारी हो तो हाल का हकीम देखना पड़ेगा। मैं भी आप लोगों की तरह माना नहीं करता था। मैंने अपने हाथों से सिमेंट की मूर्ति बनवाई। बड़ी आरतियां उतारा करता था। बड़ी भारी विनती किया करता था। मेरे मन को बड़ी भारी शान्ति मिला करती थी। मेरे पास कुछ भी नहीं था। गरीब हालत थी। मुझे वह महात्मा रात को स्वप्न में दिखाई दिया। ये बात मैं सच्चाई के साथ कहता हूं। ईमान से कहता हूं। महात्मा ने कहा–भक्त! आप ऐसे करना। जब आप सवेरे घूमने के लिए जाओगे तो उस वक्त आप को एक आदमी मिलेगा। वह तुम्हें भैंस के लिए कहेगा तो तुम उस भैंस को ले लेना। जितने भी रुपयों में दे उतने ही रुपयों में ले लेना। मैंने कहा–अच्छा! मैं घूमने गया तो वही आदमी मिला और जैसे कही थी वही बात ज्यों की त्यों बन गयी। उसने कहा–भैंस ले लो। मैंने वह भैंस ले ली। उस भैंस से

उठा नहीं गया। वह बाय में जुड़ी हुई थी। दो तीन आदमियों ने उसको उठाया। उन्होंने उसको मेरे साथ कर दिया। आहिस्ता—आहिस्ता मैं अपने घर ले आया। मेरे काका, ताऊओं ने बड़ी मारो मार की। पर मुझे तो उस महात्मा पर विश्वास था। सच बताता हूं, दूसरे ही दिन वह भैंस अपने आप उठकर बणी में चरने के लिए चली गई। वह ली तो ८० रुपए में थी पर उसको एक महीने के बाद में ४५० रुपये में बेच दिया। मेरे मन में विचार आया कि मैं बाबा की मूर्ति बनवाऊं। मैंने मूर्ति बनवा दी। ऐसी बातें होती थी। मैंने महाराज पंडित फकीर चन्द जी का सत्संग किया और मेरे गुरू महाराज ने मुझसे अभ्यास करवाया। फिर मैं जहां भी महात्माओं के पास गया, तो मैंने कोई भी चीज नहीं मांगी।

ऐ सत्संगियो! तुम मांगते हो। कोई बेटा मांगता है, कोई धी—जंवाई मांगता है। कोई तन का सुख मांगता है। कोई घोड़ा, हाथी मांगता है। सभी मांगते हो पर तुम्हें मांगना नहीं आता। हजूर महाराज जी की स्वामी जी महाराज के साथ बात चीत हुई। स्वामी जी ने पूछा—सालिगराम! क्या चाहिए? उन्होंने दो चार चीजें मांगी। स्वामी जी ने कहा—क्या बच्चे को भी कुछ मांगना आता है? वह तो गेंद, बल्ला ही मांग सकता है। हमने तुझे वह वस्तु दे दी है कि तेरे खानदान का उद्धार हुआ। सालिगराम जी ने कहा—नहीं जी! स्वामी जी ने कहा—जाओ तेरे सभी रिश्तेदारों का भी उद्धार हुआ। उन्होंने कहा—नहीं जी। स्वामी जी ने फिर कहा—जाओ तेरे सारे इलाके का बेड़ा पार हुआ। सालिगराम जी ने फिर कहा—नहीं जी। स्वामी जी ने कहा—जाओ, सारी दुनिया का ही उद्धार हुआ। आपने भी यह सुना है कि स्वामी जी ने कहा था—अब जगत उद्धार होता नजर आ रहा है। स्वामी जी ने कहा—जाओ, सारे ही देश का उद्धार हुआ। उन्होंने फिर कहा—नहीं जी। थोड़ी देर सोचने समझने के बाद कहा—अच्छा! अब मैं समझ गया। जाओ!

जो राधास्वामी नाम को समझ लेगा उसका उद्धार हो जाएगा। सालिगराम जी ने कहा—यही मैं मांगना चाहता था। वही बात है आपको किसी को कुछ भी नहीं मांगना आता है। फिर भी वे बातें आपको बताता हूं। मैं किसी से कुछ भी नहीं मांगता था। सभी से एक ही चीज मांगा करता था। जिन संतों महात्माओं के पास गया मत्था टेका और यही कहा—हे मालिक, ऐ महात्माओं! तुम पूर्ण हो। तुम मेरे ऊपर एक ही रहम कर देना कि इस संसार में मेरे को फिर न लाना। बस, मैंने तो और कुछ भी नहीं मांगा। यही चीज मांगी। काफी महात्माओं ने दिल से कहा भी है कि तू नहीं आएगा। तेरा काम पूरा हो गया है। आप जब भी मांगते हो, तो उस मालिक से मालिक को ही मांगों और कोई भी चीज मत मांगा करो। और चीज मांगोगे, तो कई चीजें तो ऐसी ही होती ही है कि तुम क्रोधी बन जाओगे। कई ऐसी होती हैं कि तुम अहंकारी बन जाओगे। कई चीजें ऐसी होती हैं कि तुम अपना सर्वस्व खो दोगे। अगर तुम परमात्मा से परमात्मा को मांगोगे तो तुम्हारा सर्वस्व बना रहेगा। सो मैं आप लोगों को बता रहा था कि मैंने किसी से कुछ भी नहीं मांगा सिर्फ इतना ही कहता था—हे मालिक ! मैं फिर कभी इस संसार में न आऊं। इसी को कहते हैं—

एक साधे सब सधैं और सब साधे सब जाहिं।
कहैं कबीर अब सोच समझ मन माहिं।।

एक के साधने से सभी सध जाते हैं। इसी तरह हमें ध्यान योग, साधन भक्ति—भजन उपासना में दान पुण्य में, एक को ही साधना पड़ता है। वह क्या है? वह है—शब्द! जिसने शब्द की कमाई कर ली तो समझो उसका काम पूरा बन गया। संत कोई फूंक नहीं मारते हैं। वे तो भेद देते हैं। भेद देकर जीव का उद्धार कर देते हैं।

मैं आप लोगों को अपनी बातें बता रहा था। मैं महाराज पंडित

फकीरचन्द के पास चला गया। उन्होंने मुझसे बातें करते–करते कहा–संत ताराचन्द! मैं गौड़ ब्राह्मण हूं और नेम करके कहता हूं। यदि मैं झूठ बोलूं तो मेरे शरीर में कुष्ठ पड़े। मैंने कभी झूठ नहीं बोली है। मेरे आगे धनुषधारी राम चलता था और कष्ण जी बांसुरी लिए हुए आगे–आगे चलता था। मैंने इनकी क्रिया की थी। जब एक दिन कष्ण जी महाराज ने मुझसे कहा कि ये गोबर पड़ा है, इसे खा ले तो मैंने इसमें से तीन ग्रास ले लिए। उस वक्त मेरे दिल में यह बात आई कि आज तक भागवत में, महाभारत में, गीता में, किसी भी पुस्तक में ऐसी चीजें नहीं लिखी कि किसी ने किसी को गोबर खिलाया हो। ये कौन था? यही सोचा कि ये काल था। कोई संत हो तो दया करके प्रगट हो जाए। २४ घंटे बाद मेरे सामने महर्षि शिवव्रतलाल जी का रूप प्रगट हुआ। उन्होंने मुझ पर दया की। उन्होंने जो भी वस्तु बताई, आज मैं ये कहता हूं कि वहां अवतार भी नहीं पहुंचे हैं। ये तीनों भी काल के जीव हैं वहां नहीं पहुंचे हैं। पर मैं तो ये बातें नहीं कहता। उन्होंने जो कह दिया वो ठीक है। मेरी बातें मैं आपको बताता हूं।

मैंने उनके पास जाकर कहा–महाराज! मेरे साथ भी ऐसा–ऐसा. .....होता है। उन्होंने कहा–बेटा यह तो बिल्कुल ठीक है। पर क्या एक बात पूछ लूं? मैंने कहा–हां जी। उन्होंने पूछा–आपके उस बाबा से यह पूछना कि मोक्ष कैसे होती है। देखें, बताता है या नहीं। मुझे ये बातें नहीं मिलीं। मुझे ये तो मिल गई कि यह घटना घटती या ये काम बनेगा या नहीं बनेगा। मेरे दिल में एक ख्याल आया। वह ख्याल क्या आया? अगर वह महात्मा पूर्ण थे और करनी के धनी थे तो वह तो सतलोक में पहुंच गए। अब यह फिर कौन दीखता है? यदि वे भूत ही बने फिरते हैं तो फिर यह सब ढ़कोसला है। जब उसका ही उद्धार नहीं हुआ तो उसने भक्ति भी क्या की?

ऐ सत्संगियो! मैं ये बात भरी सभा में कहता हूं कि जो असली परमार्थी हैं और अधिकारी हैं वे मेरी बातों को समझ जाएंगे। काफी लोग कहते हैं कि मुझे गुरू दिखाई दिया या मुझे फलां दिखाई दिया। फिर तो तुम्हारे गुरू ही अधुरे थे। वे करणी के धनी भी नहीं थे। क्योंकि वे भूत ही बने फिरते हैं। क्या इस बात का किसी के पास जवाब है? मैं सत्संग करवाता हूं। महापुरुष से शिक्षा लेकर ही ये करवाता हूं। मेरे साथ उनकी बातचीत हुई। मैंने कहा–मेरे साथ ये बातें होती हैं। मुझे साक्षात पर्चे भी मिलते हैं। उन्होंने कहा–बेटा! वे भूत बने नहीं फिरते। मैंने कहा–बस, मैं यही प्रश्न पूछने के लिए आया हूं। पता करना चाहता हूं कि यह क्या चीज है? उन्होंने बताया कि यह बड़ी ऊंची चीज है। आप भी समझो। मेरी बात समझ में न आए और मेरी बात पर विश्वास नहीं हो, तो कह देना कि मैं ये बात नहीं मानता हूं। जैसे महाराज जी कहा करते थे। ऐसे मैं सत्संग करवाता हूं। झगड़े बाजी नहीं। किसी ने एक बहुत बढ़िया फोटो बनाया। उस फोटो को बना कर चौराहे पर लगा दिया। उस पर लिख दिया कि इस फोटो में अगर कोई कमी हो तो चिन्ह लगा दो। उस पर सारी जगह चिन्ह ही चिन्ह लग गए। वह उदास होकर अपने गुरू के पास आया। उसने कहा–महाराज! मैंने तो बड़ी कोशिश करके ये फोटो बनाया था। परन्तु इस पर तो हर जगह पर ही निशान लगा दिए हैं कि यहां भी गलत है और यहां–यहां गलत है। उन्होंने कहा–बेटा! ऐसा हो सकता है। गलती होगी पर एक फोटो और बना। उसने बहुत बढ़िया फोटो बनाया। फिर उसके गुरू ने कहा–इसको चौराहे पर लगा दे और इस पर यह लिखवा देना कि अगर इस फोटो में कोई नुक्स दिखाई देता है तो इससे बढ़िया फोटो बना कर यहीं खड़ा कर दे। उसने ऐसा ही लिख दिया। कोई भी उस फोटो के पास नहीं आया। गुरू ने पूछा–क्या बना? क्या किसी ने भी निशानी नहीं

लगाई? उसने कहा—नहीं, किसी ने भी इस पर कोई कमी नहीं दिखाई। उसके गुरू ने कहा—इसके बराबर में बनाना बड़ा मुश्किल है। नुक्स निकलना तो बड़ा आसान है। सो नुक्स तो कोई भी निकाल सकता है। पर तसल्ली करके ही अपने हिसाब से नुक्स निकालना चाहिए। जो महात्मा मुझे दर्शन देते हैं, वो अगर मोक्ष में चले गए तो दर्शन कौन देता है? यह मुझे बड़ी भारी तड़प थी। आप लोगों को भी ऐसी कोई तड़प होगी। फकीर चन्द जी महाराज ने कहा—बेटा! मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। सच्चाई से कहता हूं। यही एक बात समझने के लिए मैं महर्षि जी के पास गया था और यही बात मैं आपको समझाता हूं। अगर तूने ये बात समझ ली तो झगड़ा मुक गया। मैंने कहा—आप बताओ। उन्होंने कहा—ये होती है संतों की रेडीशन। उन महात्माओं के परमाणु घूमते हैं। जो महात्मा थे वे तो करणी करके स्वर्ग—वैकुंठ में या सतखण्ड में कहीं भी चले गए। जो तुम्हारा काम करता है वह उनकी रेडीशन है। उनके परमाणु घूमते रहते हैं। जब तुम उनका ध्यान करते हो तो उनकी रेडीशन तुम्हारी रेडीशन से टकरा जाती है, उन्होंने ये साइंस के हिसाब से बताया, वही तुम्हारा काम कर देती है। अब तो साइंस वाले, महाभारत के युद्ध में जो जो बातें कही गयी थी उन बातों को भी टेप करते हैं। मैंने ऐसा सुना है। फिर यह कौन सी बड़ी बात है? हमारे ऋर्षि—मुनि महात्माओं की वाणियां तो आसानी से टेप हो सकती हैं। उनकी रेडीशन के परमाणु यहीं घूमते हैं। वे तो चले जाते हैं पर उनके परमाणु घूमते हैं। अगर आप हाथ हिलाते हो तो इससे भी वायुमण्डल में हलचल होती है। **अगर तुम अपने घर में या कहीं और जगह पर गंदा बोलते हो तो वह वाणी भी आसमान में घूमती रहती है। इसीलिए कभी भी किसी से गलत न बोलो।** गलत बोलोगे तो वहां का वातावरण खराब हो जाएगा। जिस जगह पर यज्ञ हो चुका है वहां का

वातावरण पवित्र है? क्योंकि उसके परमाणु घूमते हैं। किसी जगह पर कोई आदमी मर जाता है तो वहां से निकलते हुए घबराते हैं कि यहां तो आदमी मरा था। वह भूत बना है। क्यों घबराते हैं? क्योंकि उसके परमाणु घूमते हैं। वे याद आ जाते हैं। याद क्यों आते हैं? क्योंकि उनकी रेडीशन टकरा जाती है। आप प्रश्न कर सकते हो ये बातें तो जानकार को होती हैं। अनजान को नहीं होती। मैं कहता हूं कि अनजान को भी होती हैं। अनजान को किसी मकान में छोड़ दो। उस मकान में भी ऐसे परमाणु टकरा जाते हैं। वह भी वहां से भाग जाता है। आप फिर प्रश्न कर सकते हो कि अगर सड़क पर कुछ हो गया है तो वहां क्या होगा? वहां भी परमाणु घूमते हैं और कई सज्जनों को वे परमाणु टकरा जाते हैं। वे कहते हैं से यहां कोई घटना हुई है।

महाराज शिव जी और पार्वती कहीं जा रहे थे। चलते—चलते शिव जी महाराज नादिये पर से उतरे और उन्होंने भूमि को प्रमाण किया। पार्वती ने कहा—क्या बात है? उन्होंने कहा—यह भूमि बड़ी पवित्र है। पार्वती ने पूछा—क्यों? उन्होंने कहा—यहां संतों का सत्संग हुआ है। जहां संतों के चरण टिक जाते हैं। वह भूमि पवित्र हो जाती है। तुलसी दास जी कहते हैं—

संत चरण गंगा की धारा। जहां टिके हो निस्तारा।।

वे किस तरह निस्तारा करते हैं? संतों को देखकर तो घटिया आदमी नफरत भी करते हैं। आप कहोगे कि उनका निस्तारा नहीं होता। पर मैं कहता हूं कि उनका भी होता है। आप पूछोगे—कब होता है? मैं कहता हूं कि होता भी है और नहीं भी होता। वास्तव में तो जिनके विचार पवित्र होते हैं उन्हीं का निस्तारा होता है। संतों के परमाणु निकलते रहते हैं। संत अपने चरण टिका कर चले जाते हैं। वह भूमि पवित्र हो जाती है और वहां आने वाले सभी तो पवित्र नहीं होते हैं। अगर सब होते हैं तो वह भी मैं बता दूंगा।

अर्जुन साहब पूर्ण पुरुष थे और उनका भाई कोई जयचन्द या ऐसा ही कुछ नाम था सदा उनका दुश्मन रहा। उनके भाई की मेहरबानी से व जल में गोता मार गए। उन्हें डूब कर मरना पड़ा। वह तो नहीं सुधरा। सुधरता तो वही है जिसके विचार पवित्र हैं और जिसने मालिक के आगे विनती की है। उसके भाग अच्छे होते हैं। वही सुधरते हैं। संतों की औलाद के ही बारे में मैं कहना चाहूं तो क्या कहूं। बड़े—बड़े संतों की औलाद भी चोर डाकू बन जाती है। अगर मैं वर्णन करूं तो तुम यही कहोगे, ये बातें कहनी नहीं चाहिएं। बातें चलती—चलती आ जाती हैं। सो महाराज फकीरचन्द ने मेरा भ्रम इस तरह से दूर किया था। मैंने कहा—घटिया क्यों आते हैं? उन्होंने कहा—उनके खुद के विचार गंदे होते हैं, तो उनके साथ ही इसी तरह टकरा जाते हैं। आप समझते हो? यही बातें होती हैं। इसी लिए जब हमारे विचार गंदे हों और उस टाइम पर हम रति देते हैं तो औलाद भी गंदी ही पैदा होती है। सो हमारे बुजुर्ग जब संतान पैदा किया करते थे, तो वे अच्छे विचार देखकर ही करते थे। हम फसल काटने का मुहूर्त देखते हैं, खेती बोने का भी मुहुर्त देखते हैं। मैं यह बात कहता—कहता दूसरी ओर आ गया। सो भी बता दी है। तो मेरा संशय, भ्रम दूर हो गया। जिस आदमी के विचार पवित्र होते हैं वह इन्सान कहां सतलोक में, स्वर्ग—वैंकुठ में चला जाता है। वहां मियाद होती है तब तक रहता है पर उसके परमाणु घूमते रहते हैं और वे जब सच्चे जिज्ञासु से टकराते हैं तो रूप बनकर दर्शन दे देते हैं।

मैंने महात्मा का फोटो बनवाया। मैंने उनकी फोटो देखी थी। मेरे दिमाग में यही था कि वह साधु था। जैसा मुझे उसका रूप दिखाई दिया वैसा ही कहकर मैंने मूर्ति बनवा दी। मेरे बाप—दादा ने भी उसको कभी नहीं देखा था। फिर आप प्रश्न कर सकते हो कि महाराज! आप अभी तो ये कह रहे थे कि वक्त का संत काम

देता है। सो मैंने वक्त के संत की जो बातें कहीं, उनको तुम नहीं समझे। मुक्ति के लिए तो वक्त का संत ही काम देता है। मुक्ति के लिए तो वक्त का संत सतगुरू ही तलाश करना पड़ेगा। गुरू से मुक्ति नहीं होती। सतगुरू से मुक्ति होती है। दत्तात्रेय ने २४ गुरू बनाए पर कल्याण के लिए तो एक ही गुरू किया है। वह सतगुरू किया। सतगुरू जो होता है वह पाखंड नहीं रचता है। वह अपना कमा कर खाता है। सतगुरू जो होता है वह सतमार्ग बताता है। वह जाल में नहीं फंसाता। वह तो सतमार्ग बता कर चला जाता है। आप कहोगे—क्या कोई प्रमाण है? क्यों नहीं है? कबीर साहब का प्रमाण है। उन्होंने सारी ही जिन्दगी तानी तनी। उनके बड़े—बड़े शिष्य थे। धर्मदास ने २१ करोड़ रुपया लाकर भेंट किया था परन्तु उन्होंने कहा कि भाई इसको पुण्य में दे दो। मेरा गुजारा तो इस तानी से ही चलता है। तानी तनते हुए वे कहते हैं—

ताना भाई कौन तनेगा, हम तो राम भजेंगे राम।

और वह राम ही भजता रहता। कितनी बड़ी बातें कहता है—

घुड़ले चढ़के ताना तनिया, ऊंट चढ़े लौ लाई।
हस्ती चढ़कर बनने लाग्या, घरां साहिबी आई।।

सारा काम घर में ही कर लिया। रविदास जी, जाति के चमार थे पर मीरा बाई जैसी उनकी चेली थी। वह नौ करोड़ का लाल लेकर उनकी कुटिया पर आई। उन्होंने कहा—बेटी! मुझे तो जो भी कुछ मिला है इन जूतियों में ही मिला है। वे सारी जिन्दगी जूती ही बनाते रहे और गीत भी गाते रहे। आपने यह शब्द सुना होगा—

सासरे नाहिं जां गुरू मिले रविदास।
काख में से रांपी काढ़ी, चीरा अपना गात।
चार जुगों के चार जनेऊ आठ गांठ नौ तार।।
सासरे नांह जां, गुरू मिले रविदास।।

यह शब्द भी आपने सुना होगा।

अपने महल से मीरा उतरी घट में गंगा नहा।
पां पूजूं उस रविदास के स्वर्ग लोक लिए जा।।

संतों के चरण अड़सठ से उत्तम होते हैं। तुलसी दास ने तो ये कहा—

संत चरण गंगा की धारा।
जहां टिके हो निस्तारा।।

स्वामी जी कहते हैं—

संत चरण अड़सठ से उत्तम।
भूमि पवित्र जहां पग धरते।।

दोनों बातों का अर्थ एक ही है कि वे जहां चरण रखते हैं, वह भूमि पवित्र हो जाती है। पर उनका भाव पवित्र होगा तभी। वही राम रावण को दुश्मन दिखाई देता है और विभीक्षण को मित्र। वही कष्ण पांड़वों को साथी दिखाई देता था, परन्तु दुर्योधन को दुश्मन। सो, जैसा जिसका भाव होता है उसे वैसा ही दिखाई देता है। कहते हैं—

गुरू—गुरू में भेद है गुरू—गुरू में भाव।
सोई सतगुरू बंदिए जो शब्द बतावै दाव।।

जो शब्द का भेद देता है उसी गुरू के पल्ले बंध जाना चाहिए। बेपरवाह होकर। दो बातें फिर बताता हूं कि एक गांव के गुरू तो कई हो जाते है। कोई दो गांवों का हो जाता है। कोई एक ही मोहल्ले का हो जाता है। कोई एक इलाके का गुरू हो जाता है पर संत सतगुरू जब आते हैं, तो वे सारी ही दुनिया में तहलका मचा देते हैं। वे पाखंड नहीं करते। जैसे—दूसरे धन भी लेते हैं और इज्जत भी लेते हैं। वे ऐसे गुरू नहीं बनते। संत सतगुरू जो आते हैं वे तो यही कहते हैं—

गुरू सोई जो शब्द स्नेही, शब्द बिन दूसर न सेई।
शब्द कमावै सो गुरू पूरा, उन चरणन की होजा धूरा।।
और पहचान करो मत कोई, लक्ष—अलक्ष न देखो कोई।
शब्द भेद लेकर तुम उनसे, शब्द कमाओ तन मन से।।

बस! उनसे शब्द का भेद लेकर शब्द कमाओ। तन से कमाई करो। अगर तुम किसी से बंध गए तो फिर तुम बंध ही गए। बंधना नहीं चाहिए। संत बंधते नहीं हैं।

संत सूरमा शेर है, गर्जे और गाजे।
दुनिया भेड़ है, बिदके और भाजे।।

कबीर साहब का शब्द बता रहा था—

जग में मानस कोई न देखा जो देखा वह पशु के रूपा।

आप पूछोगे कि क्या कोई भी आदमी नहीं है। नहीं। कोई राधास्वामी को पकड़े बैठा है, कोई दादू जी को दोनों हाथों पकड़े बैठा है। कोई कबीर साहब को, कोई सनातन को दोनों हाथों से पकड़े बैठा है। कोई आर्य समाज को, कोई मोहम्मद साहब को दोनों हाथों से पकड़े बैठा है। कोई ईशू मसीह को मजबूती से पकड़े हुए है। कोई ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को दोनों हाथों पकड़े बैठा है। कोई अपने ही घर में अपने पित्तरों को पकड़े बैठा है। सभी बैल बने बैठे हैं। उन बैलों का उद्धार कैसे हो? वे यह तो सोचते ही नहीं उद्धार कैसे होना है।

मेरे पास एक भाई आया। उसने कहा—हमारी तो परम्परा है। हमारे यहां एक बाबा की पूजा होती है और उसको एक बोतल शराब चढ़ाई जाती है। मैंने कहा—वाह! तुम भी खूब और बाबा भी खूब। ऐसे लोग गिर जाते हैं। अगर इन कौम और मजहबों को लेकर बैल बनते हैं, तो ये गलत बातें हैं। हमारे बाबा ने न तो शराब पीनी बताई और न ही मांस खाना बताया। सभी धर्म यही कहते हैं कि ये तो राक्षसों के काम हैं। इन चीजों को छोड़ दो। इनके

बैल मत बनो। इन रस्मों, रिवाजों में फंसकर बैल बन जाते हैं। तुम्हारी मर्जी है—शिव जी को पकड़ लो। राधास्वामी पकड़ लो, राम पकड़ लो पर तुम्हें एक बात तो सोचनी ही पड़ेगी कि पवित्र होना पड़ेगा। पवित्र हुए बिना तो न राधास्वामी ही खुश होगा न गोरखनाथ और दादू, पलटू ही खुश होगा। मजहब बदलने की जरूरत नहीं वहां तो अपने विचारों को बदलना पड़ता है। अगर मजहब को ही पकड़ कर बैठ गए तो कभी भी नहीं तिरोगे।

शुद्ध विचार तो जो दादू जी के मिलते हैं, वही कबीर साहब के मिलते हैं। वही मोहम्मद साहब के मिलते हैं और वही ईशू मसीह के मिलते हैं। पर हम रस्म—रिवाज के ठेकेदारों ने इंद्रियों का मजा लेने के लिए कहीं बकरे काटने शुरू कर दिए, कहीं सूअर मारने शुरू कर दिए कहीं गाय मारनी शुरू कर दी। कहीं गंगा जल और कहीं शराब चढ़ानी शुरू कर दी।

महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे कि किसी के घर में लड़की रो रही थी। वहां एक आदमी ने कहा कि इसे थोड़ा सा अमल (अफीम) दे दो। उस लड़की को अफीम दे दी। वह उसके नशे में सो गई। दस—पन्द्रह वर्ष के बाद उस घर में फिर ब्याह था। जिन्होंने पहले शादी में लड़की को अफीम देने की बात सुनी थी उन्होंने कहा कि भाई अपने ब्याह में तो लड़की को अमल (अफीम) भी दिया करते हैं। दूसरे ने कह दिया कि लड़की तो घर में है ही अफीम दे दो। थोड़ी सी अफीम उसको दे दी। वही एक सौण (सगुन) बना लिया एक तरह से। शादी के बीस वर्ष बाद उनके घर में फिर ब्याह हुआ तो लड़की कोई नहीं थी। उनके पड़ोस में एक छोटी लड़की थी। उनको मात्रा का ज्ञान तो था नहीं। एक अफीम की डली उसको दे दी। वह खा गई और मर गई। रोने—पीटने लग गए। लोगों ने पूछा—ये कैसे हुआ? उन्होंने कहा पता नहीं। पूछ—ताछ से पता चला। अफीम देने वाले ने

कहा—हमारी तो ये रस्म थी कि हर शादी में लड़की को अमल (अफीम) देते हैं। सो हमने इसको दी और ये मर गई। ये हाल है। सबसे पहले तो किसी और ही कारण से लड़की को अफीम दी गई थी पर इसकी लोगों ने रस्म बना ली। एक और भी मिसाल बताते हैं। घर में जो चाट (खाने के लिए) बनाते हैं उसे सींख के साथ खाते हैं। कहीं शादी थी। वहां चाट बनाई और उसमें हर दोने के साथ एक—एक सींख रख दी। पांच दस वर्ष में फिर शादी हुई। वहां सींख नहीं मिली तो किसी ने कहा कि सींख के स्थान पर एक—एक तूली ही रख दो। उन्होंने तूलियां रख दी। पांच दस वर्ष में फिर विवाह हुआ तो उनको तूलियां नहीं मिली। किसी ने कहा—तूलियां नहीं हैं, कोई बात नहीं लकड़ियां रख दो। वहां लकड़ियां रख दी। उन्होंने तो इसे एक रश्म ही मान कर रखना शुरू कर दिया। फिर २०—३० वर्ष बाद में शादी हुई तो उन्होंने कहा—अपने यहां तो भोजन के साथ हर पत्तल के बराबर में लठ रखा करते हैं। उन्होंने वहां लाठिया रख दीं। कई बाराती निकम्मे थे। उन्होंने शराब पी रखी थी। वे अटपट बोलने लगे। उनका झगड़ा हो गया। खून खराबा हो गया। थानेदार आया। थानेदार ने कहा—भाई! बात तो ठीक है। शादी में लड़ाई भी हो जाती है पर तुम एक बात बताओ—क्या तुम्हारा लड़ाई का पहले से ही विचार था? उन्होंने कहा—नहीं जी, ऐसा विचार तो नहीं था। थानेदार ने पूछा—फिर ये इतनी लाठियां कहां से आ गई? जब इतनी लाठियां इकट्ठी कर ली तो यही समझो तुम्हारा लड़ाई का विचार था। कोई सज्जन महात्मा वहां आ गया। उसने पूछा—क्या बात है? उन्होंने बताया—हमारे शादी में लठ रखने का रिवाज है। उसने कहा—अरे बेवकूफो ! वह तो पहले—पहले तुम्हारे बड़ों ने चाट खाने के लिए सीखें रखी थी। इसीलिए कहते हैं—

पंडित का पढ़ाया पाधा, पाधे का पढ़ाया आधा।
आधे के टिड्डी फिड़का, हुर्र–हुर्र फुर्र।।

ऐसे भी बन जाता है। लोग उस असलियत को भूल जाते हैं। जब काबिल महात्मा मिल जाता है तो जीवन सफल हो जाता है। वह मजहब का ठेकेदार नहीं बनता। क्या किसी मजहब ने तुम्हारी मदद करनी है? मजहब से क्या लेना है? राधास्वामी मत ने तो तुम्हारी कोई मदद नहीं करनी। अगर मदद ही करवानी है तो राधास्वामी की जो लाइन है, उस लाइन को पकड़ो। अगर कोई कहे कि कबीर पंथी बन जाएं। कबीर पंथी तो शराब पीते हैं। कबीर पंथी तो मांस खाते हैं। यदि मैं उसका नाम ले दूं तो तुम मान भी जाओगे। पर कबीर साहब कहते हैं–

तिलभर गोश्त खाय के, कोटि गौ दे दान।
काशी करवट ले मरे, फिर भी नर्क नादान।।

सिखों में बड़ा भारी कुकर्म होता है। पर उनका ग्रंथ साहब कहता है–

जे रत लागे कापड़ा जामा होय पलीत।
जे रत पीवें नानका से क्यों निर्मल चित्त।।

एक महात्मा जी और कहते हैं–

मांसाहारी मानवी, अफल गमाई देह।
नितानंद हर भजन का, कदै न उपजै नेह।।

शराबी और कबाबी किसी काम के नहीं होते हैं। मैं बातें कह रहा था कि हमें तो एक सच्चाई की बात पकड़ लेनी चाहिए। सच्चाई कौन सी? तुम इनकी तरह किसी चीज से बंध जाओगे तो मारे जाओगे। कबीर जी के शब्द में आगे कहा है–

कोई बैल बना गोरख का, कोई बैल बना शंकर का।

अब मैं गोरखनाथ की प्रणाली पर बातें कहता हूं। गोरख महाराज तो ऐसे थे कि उन्होंने तोबा बुलवा दी थी। उनका एक

शब्द आपको सुना कर अर्थ कर दूं। उन्होंने तो अपने गुरू को भी समझाया है। आपने भी सुना होगा–

ऐसा–ऐसा कर्म कोई मत कीजो,
नाथ जी आब घटे तन छीजे।

ये गोरखनाथ जी की वाणी है। जब वे कामरूप देश से अपने गुरू को लाने के लिए गए थे तब उन्होंने ये शब्द कहा था। सो ही मैं कहता हूं कि किसी वक्त पर तो गुरू अपने चेले का उद्धार करता है और कोई–कोई चेला भी अपने गुरू को तार देता है। आप ऐसी मिसाल पूछोगे तो ऐसी मिसाल भी हैं। गोरखनाथ ने अपने गुरू मच्छंदरनाथ जी का जीवन सफल कर दिया। कबीर साहब ने अपने सतगुरू रामानन्द जी का जीवन सफल कर दिया। ये सांझा होता है। कभी गुरू तारता है कभी चेला भी तार देता है। संत जिसको हाथ लगा देते हैं उसका उद्धार जरूर ही करते हैं। आप पूछोगे–किस तरह करते हैं? कबीर साहब के वक्त की मिशाल है और वह स्वामी जी के वक्त में पूरी हुई। कौन सी है? कबीर साहब रंडी को हाथ लगाकर चले थे, वहीं रंडी पन्नी के नाम से आई और उसका उद्धार स्वामी जी के वक्त में हुआ। सो संत जिसको पकड़ लेते हैं, कभी भी छोड़ते नहीं हैं। उसका उद्धार करवा देते हैं। मैं संतों की बातें कहता हूं। कहने वाले बिल्कुल ठीक कह जाते हैं। तुम बैल बन जाते हो तो दुख पाना पड़ता है। कोई शंकर का बैल बन जाता है, तो कोई गोरख का बन जाता है। इसी तरह कोई राधास्वामी का भी बैल बन गया। मैं एक जगह चला गया। वहां लोग राधास्वामी के विषय में बातें करने लग गए। मैंने कहा–क्या बात है? उन्होंने कहा–राधास्वामी ये है और वह है। तुम्हें राधास्वामी नाम लेना पड़ेगा। मैंने कहा–राधास्वामी किस का नाम है? ये भी तो बता दो। वे अपनी बातें करने लगे। मैंने कहा–नहीं, राधास्वामी सारी दुनिया की जान है। राधास्वामी नाम

सुरत और शब्द का है। जैसे हिन्दू कहते हैं—राधा नाम आत्मा का और स्वामी नाम परमात्मा का है। तुम तो इसे एक मजहब बना कर बैठ गए। फिर कैसे तिरोगे? फिर यहीं घिर जाते हैं। ये असलियत को भूल कर बैल बन जाते हैं। इनके डेरों में जाओ, ऐसी घुड़की पिलाते हैं कि हमारा सत्संगी दूसरे के पास नहीं जाएगा।

ऐ सत्संगियो! क्या मैंने यह बात कभी किसी को कही है कि दूसरे के सत्संग में न जाना? वे चोर ही होते हैं जो ये कहते हैं कि अपना सत्संग छोड़कर न जाना। उनमें धोखा होता है वे चोर होते हैं। चोर कैसे? यही तो बात है। मैं अपने गुरू के पास गया। उनसे बातें की। मैंने उनसे कहा कि महाराज जी! क्या मैं दूसरी जगह भी जा सकता हूं या नहीं? उन्होंने कहा—कहीं भी जाना। सभी जगह घूमना। मैं कूएं का मेढ़क नहीं बनाता आपको। घूम कर सत्संग करना। मुझ से अच्छी चीज मिल जाए तो वहां नाम भी ले लेना। गुरू धारण कर लेना। सो सतगुरू तो सतगुरू ही होते हैं। जीव धोखे में ही रह जाते हैं। अपने चेलों को नाम देकर कहते हैं कि और कहीं नहीं जाना। अगर कहीं चला जाएगा तो गुरू को बट्टा लग जाएगा। मैं कहता हूं नहीं। ये गलत बातें हैं। सतगुरू तो दायरे से बाहर निकालने के लिये आता है। दायरे में बांधने के लिए और बैल बनाने के लिए नहीं कई तो लोगों को बैल भी बना देते हैं। कोई शंकर के, कोई गोरख के और कोई कंकड़—पत्थर के बैल बन जाते हैं। हमारे तो फलां बाबा की धौक पुराने वक्तों से ही मारी जाती है। हम और किसी को नहीं मानते हैं। उसको न बाप ने देखा है और न दादा ने। मैंने एक बार यहां मिसाल दी थी, फिर वही मिसाल याद आ गई। हमारे घर में बेरी वाली देवी की धौक मारी जाती थी। हम अब नहीं धोकते। मेरी दादी ने ही उस पाप को काटा था। बेरी में धौक मारने जाया करते थे। वहां गठजोड़े की जात दी जाती है। मेरी दादी बहुत तगड़ी थी। पहले तो इस

बात पर एक लाला जी को हंसी भी आ गई थी। हम उसको मामा कहा करते हैं। औरतें गीत गाती हुई आगे पीछे चल पड़ी। एक लाला जी ने उस गठजोड़े को खोलकर अपने कंधे पर डाल लिया और मेरी दादी को ही ले चला। भीड़ से न्यारी ले गया। अब दादी ने देखा कि वो तो ये नहीं, ये तो और ही कोई है। उसने झटका मारा और चादरा छुटा लिया और वह उनमें वापिस आ गई। उन्होंने पूछा कि क्या बात हो गई? मेरी दादी ने कहा—मैं तो जहां भी गई थी सो चली गई थी पर अब मैं देवी पर धौक मारने के लिए नहीं जाऊंगी और न मेरा कोई बच्चा ही आगे से देवी पर जाएगा। यह तो मेरी अपनी हिम्मत थी कि मैं वापिस आ गई। मेरा जो बिगड़ेगा सो बिगड़ जाएगा। मेरी दादी ने तो बेटे ही बेटे पैदा किए और एक भी नहीं मरा लेकिन वह कभी भी धौक के लिये नहीं गई। वह कहती थी कि अगर कोई वहां चला भी जाएगा तो उसका सत्यानाश हो जाएगा। मैं भी ये बात कहता हूं कि तुम देवी की पूजा नहीं करते। तुम तो पाखण्ड की पूजा करते हो। देवी तो तुम्हारी मां है। तुम अपने मां—बाप की सेवा करनी सीखो। मैं तो इसी तरह घटाया करता हूं। सो वो तो कभी भी जात देने के लिये नहीं गई। रस्म से बंधे हुए थे, इसीलिए तो वह वहां गई थी। इन रस्मों को तोड़ना बड़ा मुश्किल है। कोई पुजारी बना है रीति रस्म का कि हमें इसकी मान्यता है। इस तरह से बैल बन कर अपने सारे जीवन को बिगाड़ लेते हैं। उस असली रस्म को भूल गए। अपने सारे खानदान की सष्टि की वह एक ही रस्म थी। उसको तो तुम भूल गए। बनावटी रस्मों को दोनों हाथों से मजबूती के साथ पकड़े बैठे हो। उसको तो हम भूल ही गए हैं। वह एक रस्म शब्द की कमाई करने की थी। वही परंपरा की रस्म थी। सभी तन धारियों की थी। वह अपने घर जाने की रस्म थी और जितने महात्मा, संत हुए इसी रस्म से अपने घर पहुंचे हैं। कोई भी शब्द

की कमाई के बिना उस घर पर नहीं गया है। अगर कोई गया हो तो बताओ। मैं मोक्ष की बातें करता हूं। बिना शब्द की कमाई तो सभी उरले घर में रह जाते हैं। वे जो पुरानी बातें थीं उन्हें छोड़ नई—नई बातों को याद करते जा रहे हैं। इसी को कहा है कि सारा ही संसार बैल बना फिरता है।

आपने सुना भी है? मेरे गांव में एक बार दस दिन जलसा हुआ और दस दिन शास्त्रार्थ करते रहे। मुझे पता ही नहीं था। दोहा मुझे याद था—

नाम लिया जिन सब किया सकल वेद का भेद।
बिना नाम नर्कों गए, पढ़ते चारों वेद।।

जिसने नाम का जाप किया, उसका जीवन सफल हो गया। दूसरी ओर जिसने चारों वेद पढ़े और उस पर अमल नहीं किया उनकी गति यह हुई कि उनकी लंका भी जल गई। खानदान भी जल गया और बेइज्जती भी हुई। वह वेदों का जानकार ही नहीं बल्कि टीकाकार भी था। रावण बहुत बड़ा विद्वान पंडित था और टीकाकार भी था। पर एक बदपरहेजी के कारण, कौन सी बदपरहेजी थी? उसको काम अंग ने सता लिया और माता सीता को उठा कर ले गया।

ऐ सत्संगियो ! समझो ! ये बात मैं काफी बार कहता हूं। अगर तुम सत्संगी होकर किसी को धोखा दोगे तो तुम्हारी रावण जैसी ही दशा हो जाएगी। महात्मा बनकर हम किसी को धोखा देते हैं तो हमारी भी रावण जैसी ही दशा हो जाएगी। आप एक बात कह सकते हो कि रावण जैसी दशा हो जाएगी तो अच्छा है कि हम राम के हाथ से ही मर जाएंगे। अरे! खानदान का नाश करवा कर मरोगे तो मर जाओ। विभीषण बनो। खानदान भी बच जाएगा। तुम भी बच जाओगे और राज भी करोगे और मोक्ष भी हो जाएगा। आप कहोगे क्यों? रावण ने राम का क्या किया था? मैं तो कहता

हूं कि राम का कसूर ज्यादा था। रावण का इतना कसूर नहीं था। फिर भी उसके फोटो को बनाकर क्यों फूंका जाता है? रावण तो विद्वान भी था। शिव जी पर सिर भी चढ़ाया था और भारी कुर्बानी की थी। फिर भी उसका फोटो बनाकर दशहरे वाले दिन फूंका जाता है। यही एक समझने की बात है। समझना क्या है? राम ने उसकी बहन का नाक काटा और रावण माता सीता को उठाकर ले गया। यूं तो दोनों बराबर ही हुए। पर रावण ने जो जुल्म किया वह एक जुल्म अलग ही था। वह जुल्म यही था कि वह माता सीता को साधु बनकर उठा कर ले गया। आज अगर हम साधु सत्संगी बन कर धोखा करते हैं बेईमानी और छल कपट करते हैं तो सोच लो कि हम भी रावण की तरह से ही अपराधी हैं।

ऐ सत्संगियो तुम्हारा 'नामदान' भी वथा ही है। सास बहू के खून की प्यासी है। बहू सास के खून की प्यासी है। धिक्कार है! तुम सत्संगी नहीं हो। तुम तो रावण से भी गए गुजरे हो। ये मैं बताता हूं। मेरी बात गलत हो तो बोल देना। अगर मैं स्टेज पर बैठकर बड़ी—बड़ी बातें लगाता हूं और मेरा व्यवहार गलत है तो तुम मेरा मुंह देखोगे तो नर्क में जाओगे। मैं ये बातें दावे के साथ कहता हूं। ऐ सत्संगियो! ये बात मैं भरी सभा में घमंड करके नहीं कहता हूं। मैं अपनी सारी संगत को सिर झुका कर कहता हूं कि आप लोग सब ही मेरे गुरू हो। आप लोग इसीलिए मेरे गुरू हो कि आप मेरी इज्जत बचाते हो। इज्जत इस तरह से बचाते हो कि मैं घबराता हूं कि मेरी संगत को बट्टा न लग जाए। मैं अपने गुरू की डियूटी बजाता हूं। मुझे मेरे गुरू ने ये कहा था कि बेटा! अकेली औरत से कमरे के अन्दर ले जाकर बात न करना। संगत के चार पैसे न बरतना। औरतों के हाथ अपने पैरों को न लगने देना। काफी ऐसी—ऐसी बातें बताईं। मेरे गुरू ने यह भी कहा था कि जब तक ५० वर्ष का न हो अपनी उम्र वालों के साथ में न बैठना। बड़ी

समझ की बातें हैं। सो ही मैं आपको कहता हूं कि कमरे के अंदर मैं अकेला किसी लड़की के साथ बैठा हुआ किसी सत्संगी को मिल जाऊं और फिर भी तुम मेरा मुंह देखने के लिए आओगे तो सारे ही नर्क में चले जाओगे। मैं इतनी कठोर बातें अहंकार से नहीं कहता हूं। क्यों? अरे! उसमें गुरू का वचन टूटता है कि नहीं? इसे मैं पहले भी कह गया हूं—

गुरू वचन को त्यागै, दुख पावे पातक लागै,
जाने न शारद शेष गुरू की माया।

गुरू की महिमा को तो ब्रह्मा, विष्णु भी नहीं जान सकते और जो अपने इस नेम को तोड़ देते हैं वे गिर जाते हैं। सो तुम लकीर के फकीर मत बनो। तुम करणी के धनी बनो। कोई चार वेद का बैल है। ये तुम्हारे वेद तो चार बुद्धियों से ही बने हैं। मन बुद्धि, चित्त, अहंकार। इन्हीं से चारों वेद बने हैं। इनके सभी के न्यारे—न्यारे हिसाब हैं। मन बुद्धि चित अहंकार की जहां तक दौड़ है वहां तक वेद की भी दौड़ है। पर मैं तो यही बता रहा था कि लोग इनसे बंध जाते हैं। न वेद का कोई नियम पकड़ा और न वेद के किसी उसूल पर चलते। वेद पढ़ लिया बस। पढ़ने से तो कोई भी नहीं तिरेगा। वेद पढ़ने से नहीं, वेदों के उसूलों पर चलोगो, तो तिर जाओगे। पढ़ने से तिरता हो तो रावण भी तिर जाता और भी बहुत तिर जाते।

मेरे पास एक प्रेमी आया। उसने कहा—मैंने रामायण पढ़ी है। मेरी जेब में तीन सो रामायण हैं। मैंने कहा—आप गलत बोल गए हो। रामायण को तो मैं पंचम् वेद मानता हूं। यह संसारी सुधार के लिए है। तूने रामायण नहीं पढ़ी है। तूने तो सांड मरवाये हैं। तूने जुलम किए। तू क्या रामायण को जानता है? रामायण में तो भाइयों का प्यार है। तेरा अपने भाइयों से कब प्यार हुआ? तू तो दुश्मन रहा। रामायण में तो सास—बहू का भी प्यार है। रामायण

में बाप—बेटे का प्यार है। रामायण में गुरू—शिष्य का प्यार है। कितनी बातें बताऊं? रामायण में तो रत्न भरे पड़े हैं। रामायण में भक्ति भी है। अगर मानों तो रामायण में बड़ी तगड़ी भगती है। रामायण में राम को बड़ा नहीं माना, नाम को बड़ा माना है। आपने भी बातें सुनी होंगी—

ब्रह्म राम ते नाम बड़ बरदायक बरदान।
रामायण शत कोटि कर, लिये महेश जिय जान।।

ये भी मत समझो तो और भी सीधी कह दी है—

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुण गाई।।
राम ने एक तापस तिरिया तारी।
नाम ने कोटि खल कुमत सुधारी।।

अब आप बताओ नाम कि कितनी भारी बड़ाई की गई है। वह नाम सब के घट में ही गूंज रहा है। वह धुनात्मक नाम है। पर तुम छठे चक्कर से नीचे सतखण्ड के नीचे के नामों में तो गिर जाओगे। इनमें बंधे ही पड़े रहोगे। जहां एक बार जो बंध जाते हैं, वहीं बंधे रह जाते हैं। फिर आगे घर नहीं जाते हैं। इसीलिये कोई चारों वेदों का बैल बन गया, कोई षट् दर्शन का बैल बन गया है। उनसे बंध जाते हैं उनके असली तत्व का तो विचार नहीं किया। ये तो मेरे विचार हैं। कबीर का विचार कोई और हो तो मुझे पता नहीं है।

स्वयं को तो कोई खबर नहीं मिली है क्योंकि अन्तर का रूहानी गुरू नहीं मिला। अगर अन्तर का गुरू १८ चक्करों का भेद बताने वाला, ५२ अक्षर और ७२ नालों के भेद को बताने वाला १० प्रकार के शब्दों का पता देने वाला या मणी पूरक से आया हुआ सतगुरू मिलता, जो मणिपूरक में ज्यों का त्यों जाने वाला, परम पुरुष मिल जाता है तो वह सुधार करके साथ ले जाता है। मैं आप लोगों को कहता हूं कि जो ब्रह्मचर्य का पालन करता है वह बिना

अभ्यास के भी ब्रह्म तक पहुंच जाता है। लड़की बिना गुरू धारण किए ही दसवें द्वार तक चली जाती है। पर आगे उसे मार्ग नहीं मिलता है। क्योंकि लड़कियों में प्रेम होता है और दसवें द्वार में प्रेम का मार्ग इतना प्रबल है कि चाहे सो कर सकता है। लड़कियों में बड़ा भारी प्रेम होता है। आगे फिर उन्हें सतगुरू की जरूरत पड़ती है। यही बात मैं आपको बता रहा था कि इस छठे चक्कर पर तुम साधन करके आगे चलो, तभी पता चलेगा। पर जब तक अंतर का भेदी सतगुरू नहीं मिलता, तब तक कुछ नहीं देख सकेंगे। बिना दर्पण के देखे अपना मुंह कैसे देख सकोगे? जब छठे चक्कर के अंदर सुरत नहीं गई तो फिर किस तरह अपने घर पहुंचोगे? बाहर के गीत गाते रहो। बालसमंद का एक भाई बड़ा भारी विद्वान था। वह मेरे पास आया। वह बड़ी—बड़ी बातें करने लग गया। मैंने उससे पूछा—आपने अंतर का कितना सफर किया है? उसने कहा—अंतर का सफर क्या होता है? मैंने पूछा—क्या कभी आपने ओ३म् की धुनी सुनी है? उसने कहा—ओ३म् तो हर जगह ही है। उसकी धुनी क्या होती है? मैंने कहा—बस! यही बात है हमारी। मेरे गुरू महाराज जी जूई में थे। वहां आर्य समाजियों का और सनातनियों का आपस में झगड़ा हो गया। मैं एक मिसाल देकर बताऊंगा। वहीं एक सत्संगी आ गया। हम तो उसको दादा कहते हैं। महाराज जी उसको दादा नत्थू कहा करते थे। बड़ा अच्छा आदमी हुआ है। सत्संग हो रहा था और वह आ गया। उसने कहा—बीरणया! क्या शोर शराबा है? उसने कहा—यही शोर शराबा है कि ये अपने आपको सराहते हैं और वे अपने आपको। तो उसने कहा—भाई! एक बात बताओ? उन्होंने कहा—पूछो। एक लड़की गूंगी भी थी और अंधी, बहरी भी थी। उसको कोई ज्ञान तो था ही नहीं। उसमें तो सभी कमियां थी। उसका पति मर गया। उसकी चूड़ी तुड़वानी हैं तो कैसे तुड़वाई जाएं? उन सब गुणों से

भरपूर तुम हो। अंधे, गूंगे, बहरे और बावले। इसी तरह मैंने कहा—भाई साहब! आपको न तो सफर का ही कोई पता है और न आपने ओ३म् की ध्वनि को ही सुना है। उन सभी गुणों से भरपूर तुम ही हो। तुमने लोगों को धोखा दिया है। ऐ सत्संगियो ! ओ३म् की ध्वनि बड़ी सुहावनी और बड़ी प्यारी है। उसी ध्वनि से ये वेद बने हैं। ये अंतर की ध्वनी है। ये समर्थ पुरुष की दया से ही सुनाई देती है। इसमें पवित्र होना पड़ता है। जिसने उनका मुख ही नहीं देखा वे बंध कर बैठ जाते हैं। शीशा देखने पर ही अपने मुंह का पता लगता है। शीशा यही है कि अपने हृदय को साफ करके अंतर में अपनी सुरत को मोड़ो। किस तरह मोड़ोगे?

ज्यों तिल माहिं तेल है और चकमक माहिं आग।
तेरा प्रीतम तुझ में जाग सके तो जाग।।
घट—घट मेरा साइयां, खाली घट नहीं कोय।
बलिहारी वा घट की जा घट प्रगट होय।।

फिर कबीर साहब कहते हैं—

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मोको भजै, तब पाऊं विश्राम।।

इस बात पर ही खत्म नहीं किया कबीर साहब जी आगे भी कहते हैं—

जाप मरै अजपा मरै, अनहद भी मर जा।
सुरत समानी शब्द में ताहि काल न खा।।

इस पर भी कबीर साहब संतुष्ट नहीं हुए। हमारे जैसों को उन्होंने आगे कहा—

इतनी वाणी मैं रची जितना बालु रेत।
इस पापी जीव के एक न आई हेत।।

उनकी कौन मानता है? फिर कहते हैं कि सुनो इस बार ही

सुन लो।

आधी साखी कबीर की कोटि ग्रंथ कर जान।
नाम सत जग झूठ है, सुरत शब्द पहचान।।

कि नाम तो सत्य है और जग झूठा है। तू सुरत शब्द का साधन कर ब्रह्म पहचान ले। सो—

दिल का हुजरा साफ कर यार के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा दे, उसे बैठाने के लिए।।

जब तक हमारे अंदर से दुई का करंग नहीं निकलता तब तक हम अपने प्रीतम से नहीं मिल सकते। शीशा तभी दिखता है जब वह दुई की गर्द उतर जाती है। कई बार ये मिशाल दी जाती है कि किसी गांव में एक कूएं में करंग (मुर्दा) पड़ गया। गांव वालों ने कहा कि पानी खराब हो गया। इसलिए पानी को तोड़ दो। पानी को तोड़ दिया। फिर भी पानी खराब ही निकला। फिर तोड़ दिया और फिर भी खराब निकला। वहां एक महात्मा आ गया। उसने पूछा—क्या बात है? लोगों ने बताया कि इस कूएं का पानी खराब हो गया है। महात्मा ने पूछा—कैसे खराब हो गया? उन्होंने बताया कि उसमें करंग पड़ गया है। तीन चार बार पानी तोड़ दिया है पर पानी की बू नहीं जाती है। महात्मा ने पूछा—क्या करंग को निकाला है? लोगों ने कहा—नहीं, वह तो नहीं निकाला है। महात्मा ने कहा—पहले वह करंग निकालो। लोगों ने वह करंग निकाल कर बाहर डाला। फिर पानी तोड़ दिया तो वह साफ हो गया। महात्मा ने कहा—अब पानी पीओ। उन्होंने पानी पिया, ठीक था। वह महात्मा कौन है? वह सतगुरू है। कूआं हमारा शरीर है। ये दूई (ईर्ष्या, द्वेष) हमारी करंग। हमारे अंदर पड़ा है और फिर हम पानी को तोड़ते रहते हैं, कभी मालाएं फेरते हैं, कभी तप—जप, दान करते हैं। पूजा पाठ करते हैं। परसराम तो जाति के ब्राह्मण थे। वे सारे जगत में प्रलय मचा गए। उन्होंने कहा—

नाम लिया जिन सब किया, योग यज्ञ आचार।
जप तप तीर्थ परसराम सभी नाम की लार।।

ये सभी नाम से पीछे—पीछे आ जाते हैं। जो नाम की कमाई कर लेता है उसे और कमाई की जरूरत ही नहीं है। तुलसीदास जी ने भी यह कह दिया है—

कलयुग केवल नाम आधारा।
सुमर—सुमर नर हो गए पारा।।

यही स्वामी जी कहते हैं—

कलयुग कर्म धर्म नहीं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई।।

नाम के बिना न किसी का उद्धार हुआ है और न हो सकता है। शांति मिलती है तो नाम ही से मिलती है। नाम के बिना शांति ब्रह्मा और विष्णु को भी नहीं है। आपने कबीर साहब के शब्द को सुना है। वे कहते हैं—

तन धर सुखिया कोए न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।।
राजा दुखिया प्रजा दुखिया, तपसी को दुख दूना हो।
एक—एक दुख सबन को व्यापै, कोए महल न सूना हो।।
साच कहूं तो कोए न माने, झूठ कहा न जाई हो।
ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर दुखिया, जिन ये राह चलाई हो।।

ब्रह्मा, विष्णु भी सारे ही दुखिया हैं। तो सुखी कौन है? सहजो बाई कहती है—

धनवन्ते सभी दुखी, निर्धन दुख का रूप।
साध सुखी सहजो कहे, पाया भेद अनूप।।

सहजो बाई कहती है कि वही साध सुखी है जिसने नाम पा लिया है और जिसको इसका भेद मिल गया है। यही नानक साहब ने कहा है—

नानक दुखिया सब संसार।
सुखिया सोई नाम आधारा।।

जो नाम के आधार पर है वही सुखिया है। जिसका आधार नाम नहीं है वह तो सारा ही संसार दुखिया है। चाहे कितने ही साधन हों। क्योंकि जब तक अंदर से दूई रूपी करंग नहीं निकलेगा तब तक हम कभी भी पवित्र जल नहीं पी सकते हैं और न ही हम उजले हो सकते हैं। संत रास्ता बता देते हैं कि ये करंग कैसे निकलेगा? आपने ये दोहा सुना है—

करत—करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात शिल पर होत निशान।।

रस्सी पत्थर को भी घिसा देती है। इसी तरह सुमरन करते रहो—**सुमरन तार टूट न जाई।**

सुमरन का तार टूटना नहीं चाहिए। कोई भी नाम जपो। राम जपो, ओ३म् जपो, शिव जपो। तुम्हारा दिल करता है वही वर्णात्मक नाम जपो। जो भी जुबान से लिया जाता है वह वर्णात्मक नाम है। जुबान से जपते—जपते नाम अंतर में प्रगट हो जाता है और नाम प्रगट होने से उस नाम की महिमा बढ़ जाती है। वही नाम कबीर ने प्रगट किया है। जैसे मैंने कबीर साहब का दोहा कहा था—

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मो को भजे तब पाऊं विश्राम।।

वह जाप कुदरती ही होने लग जाता है। जाप होने से आप ही आप कुदरती ध्वनि का काम बन जाता है। पर ये कब होता है—

सुमरन में सुरत लगाय के मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट देय के अंतर के पट खोल।।

जब बाहर के पट दोगे तो अंतर के पट (चक्षु) खुल जाएंगे। सब जानते हैं कि अंतर के चक्षु क्या है? क्या महाभारत में नहीं बताया है? ब्यास जी संजय को कहते हैं कि हे संजय ! तेरे दिव्य

चक्षु खुल जाएंगे और तू यहीं से कुरूक्षेत्र की लड़ाई बता देगा। संजय ने पूछा—ये कैसे खुलेंगे? तो उन्होंने कहा—ये दिव्य चक्षु मेरी कपा से ही खुलेंगे।

संत भी तो ऐसे ही बातें बताते हैं। पर किसके खुलते हैं ये दिव्य चक्षु?

कामी, क्रोधी, लालची, गुरू इनसे भक्ति नहीं होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जात वर्ण कुल खोय।।
काम, क्रोध, मद लोभ की जब तक घट में खान।
तुलसी पंडित और मूर्खा दोनों एक समान।।

भक्ति कौन कर सकता है? भक्ति तो वही कर सकता है—

मान बड़ाई तोड़ बगाई, हो रहो दासन दास।
मन गगन भए का सुन रासा, मन मगन....।।

जब इंसान मान बड़ाईयों को तोड़ देता है तभी भक्ति हो सकती है। ये कब टूटती है? यह नाम की कमाई से ही टूटती है। नाम पहाड़ों और जंगलों में नहीं मिलता है। ये तो तुम्हारे ही अंदर है। कोई सच्चा रहबर मिल जाता है तो वह भेद दे देता है और बता देता है कि नाम की कमाई इस तरह कर। वह तो आसन बताता है ये तो नहीं कहते कि फलां आसन लगा या फलां लगा। आसन तो वही होता है जिसमें सतगुरू की दया हो जाती है और जिसमें शांति मिल जाती है और उसी से हजारों बिमारियां भी दूर हो जाती है। वहां उसी से धुनी सुनाई देती है और प्रकाश दिखाई दे जाता है। वही आसन हमें सतखण्ड में ले जाता है।

सो मैं बात बता रहा था—जिसने कभी भी दर्पण नहीं देखा अपने घर कैसे जाएंगे? वे तभी अपने घर पहुंचेगे जब वे अपने आप को पहचान लेंगे। काफी लोग कहते हैं कि अपने आप को पहचानों। अपने अंतर में झांक कर देखो। अंतर में झांक कर देखने का क्या मतलब है? अपना रूप देखो। अपने रूप को भी कैसे देखोगे? ये

बातें भी अड़ जाती हैं। रूप देखने वाला कौन है? तुम्हारा रूप कैसा है? ये तुम प्रश्न कर सकते हो। यही बातें हैं जो मैंने पहले बता दी हैं। इन बातों को समझ लो तो जीवन बन जाएगा। मेरे पास एक चिट्ठी आई कि मैंने अपनी आत्मा के दर्शन कर लिये। मैंने कहा—वाह ! धन्य हो। मुझे एक तो ऐसा सत्संगी मिला। पर मैं ये पूछता हूं कि आत्मा के दर्शन किसने किए? अब उस पर पटड़ा पड़ गया। बिजली पड़ गई। आत्मा के अगर वह दर्शन करता है तो वह कह देता है कि मैंने कर लिये हैं।

ऐ सत्संगियो ! आत्मा अलग है। सांस अलग है दस प्राण अलग हैं। तत्व अलग हैं। पच्चीस प्रकति अलग हैं। ये तो जैसे गाड़ी नाम एक चीज का नहीं है। कई चीजों को जोड़ कर गाड़ी बन जाती है। इसी तरह सारी कर्तम कर्ता तो एक जीवात्मा (सुरत) ही है। उसके सहारे पर पता नहीं, कितनी चीजें बन जाती हैं। बन जाती है तो वह देखती रहती है। मन अपना काम करता है ये काल का वजीर है। सुरत अपना काम करती है यह दयाल की अंश है। अब इन बातों को कब समझना है? समझने की कोशिश न करो। देखने की कोशिश करो। तुमको घंटे दो घंटे अभ्यास की बातें बताई। तो देखते रहो और आहिस्ता—आहिस्ता अपना काम पूरा कर लोगे। मुख देखने का मतलब तो मेरा यही था। कबीर साहब का मुझे पता नहीं। वे तो पूर्ण पुरूष थे।

ये बातें मैं और बता देता हूं कि पंथ के बैल पंथ में डोले। वह महात्मा आया हुआ है। उसने गुरू द्वारका दास जी से नाम भी लिया है। फिर वह मेरे पास भी आ गया। मैंने कहा—धन्य आपको है ! कि आप भी भेख भिखारियों से बच गए। मैं तो आपका सेवक हूं। मैं आपको रास्ता बता दूंगा। मेरे पास कोई आता है तो मैं उसको कहता हूं—जिसका तूने निशाना बांधा है, बांधे रख। मैं जो कुछ जानता हूं वह बता दूंगा। महात्मा आया हुआ है। उसके बाद

उसका चेहरा ही बदल गया है। क्या मैंने बदला है? नहीं, उसके विचारों ने बदला है। पर ये बात है—

सतगुरू नाम का शब्द का ज्ञान का,
समझ और विवेक का।

बल्कि मैं कबीर साहब की वाणी मैं सुनाऊं तो आप सीधे समझ जाओगे। वे कहते हैं—

देह का गुरू देह का चेला।
दोनों नर्क में ठेलम—ठेला।।
गुरू किया है देह को सतगुरू चिन्हा नाहिं।
भवसागर की धार में फिर—फिर गोते खाहि।।

वह देह का गुरू तो भवसागर की धार में फिर—फिर गोते खाता है।

गुरू लोभी शिष्य लालची दोनों खेलैं दाव।
अधबीच में डूबसी चढ़ पत्थर की नाव।।

तो गुरू नाम किसका हुआ? गुरू नाम तो सच्चे शब्द का नाम है। उस धुनी का नाम है जिसको पूर्ण रहबर मिल जाता है उसका पता देते हैं। आगे कहते हैं—

भेष भिखारी लाखों हैं। एक प्रेमी आया। उसने कहा—मैं एक प्रश्न लेकर आया हूं। मैंने कहा—बोल भाई, क्या प्रश्न है? मैं तो छोटा सा आदमी हूं। जानता कुछ भी नहीं हूं। तू मेरा गुरू भाई है। उसने कहा—मैं ये प्रश्न लेकर आया हूं कि मैंने तो यह सुना है कि महात्मा घूंघरू बांध माया के सामने नाचा करते है। क्या माया ने महात्मा नचा दिए? मैंने कहा—वाह! भई, वाह ! तूने सुना होगा। कबीर साहब कहते हैं—

ठगनी! क्या नैनां झुमकावै, तेरे कबीरा हाथ नहीं आवै।

तू माया ठगनी क्या आंखें मटकाती है, कबीर तो तेरे हाथ आने

वाला नहीं है। गोरखनाथ जी ने भी कहा है—

जहां से आई, वहां जाओ हे ज्वाला!
हम जागां जग सूता जी।

पर कई—कई महात्मा तो इसने नचा ही दिए हैं। उसने कहा—मुझे तो ये बात जंची नहीं कि वे नाचे हैं। मैंने कहा—तुझे तो नहीं जंचती पर मैंने तो ये बात बता दी। गुरू महाराज भी बताया करते हैं और दूसरे भी कहते हैं—श्रंगी की भंगी बना दी। पारासर की कितनी दुर्दशा की। विश्वामित्र का क्या हाल बनाया? नारद का क्या हाल बनाया? इसने तो बड़े—बड़े छल लिये और इसने बहुतों को सिर के बल पटक दिया। आज कल के जो गुरू बन कर इलेक्शन में उठ जाते हैं, वे भी तो सारे के सारे मार दिए हैं। लोगों ने उनके नाम ही बदल दिए। बड़े भद्दे—भद्दे नाम रख दिए उनके। ये आपको पता होगा। वह भाई बैठा है। मेरे पास भी इस बार वे आए थे। उन्होंने कहा—आप इलेक्शन में उठ जाओ। मैने कहा—मैं तो उठा हुआ हूं पर अभी देख ही रहा हूं। अभी जीता तो नहीं हूं। उन्होंने पूछा—वह कैसे? मैंने कहा—वह भी बता दूंगा। वे बोले—नहीं, हम आए हैं। मैंने कहा—तुम्हारी फांसी तो मेरे गले में (गर्दन में) फिट नहीं आ सकेगी। तुम अपनी फांसी और ही किसी के गले में डालो। उन्होंने मेरे सामने आकर ये बात कही—धन्य हो। आप तो जाल से निकल गए। हम तो यही देखते थे कि मारे ही जाते। मैंने कहा—मेरे पास सभी आते हैं। मुझे क्या जरूरत है? पर मैं तो एक ही इलैक्शन लड़ रहा हूं। वह कौन सा है? बस यही एक इलैक्शन है कि मालिक इस संसार में फिर न आऊं। इस संसार में ऊब चुके। इसमें सिवाय दुख के और तो कुछ भी नहीं है। और कुछ हो तो आप बताओ? इसीलिए भाई! जो अपनी लाइन को छोड़ देता है उसका ठिकाना नहीं रहता है। स्त्री अपनी कार से बाहर निकल जाए, वह मर जाती है और जो आदमी अपनी लाइन को छोड़ देता

है, वह गिर जाता है। जो साधु मर्यादा को तोड़ देता है, वह गिर जाता है। मर्यादा तोड़ी और डूबा।

ऐ सत्संगियो ! तुम तो साधु हो, साधु नाम ही साधना का है।

साधु सोई जो साधन करता।
तज के आलस वाद विवादा।

तुम साधु हो। कभी भी अपनी मर्यादा को नहीं तोड़ना। जो मर्यादा में रहता है वह जुग—जुग जीता है। उसका नाम अमर हो जाता है।

मैं आप लोगों को बता रहा था कि सब के सब भेष भिखारी हैं। आपने देखे होंगे, हरिद्वार में अनेक भेष भिखारी मांगते फिरते हैं। कबीर साहब ने तो उनको भेष भिखारी कहा है क्योंकि इनको पूछा जाए तो वे किसी न किसी का सहारा लेते हैं। जिसको राम का नाम मिल गया उसको भिखारी बनने की क्या जरूरत है? जिसे ओ३म् का नाम मिल गया फिर वे चन्दा वसूलते फिरते हैं। भीख मांगते फिरते हैं। लानत है! उनको। उन्हें ओ३म् के दर्शन नहीं हुए। ओ३म् तो भारद्वाज ऋषि को मिला था। उसने भरत की सारी सेना को अपनी छोटी सी कुटिया में से भोजन दे दिया। उसने ओ३म् नाम को सिद्ध कर रखा था। ऐसे लोग गुरूओं से नाम लेते हैं और गुरूओं के नाम को लेकर भी भीख मांगते फिरते हैं। मैं कहता हूं अगर कोई मेरा नाम लेकर तुम्हारे पास चंदा मांगने आ जाए, तो उसको पांच जूते मार देना। तुम्हारी पांच पीढ़ियां बिना भजन तिर जाएगी। अगर उनको ५ रुपए भी दे दिए तो पांच पीढ़ियां नर्क में चली जाएंगी। हां, चन्दा दो। अगर गांव वाले कोई धर्मशाला बनाते हैं या मंदिर बनाते हैं। गौशाला को दो। कूंए और बावड़ी का हो तो उसमें इन्कार नहीं करना है। यदि कोई ये कहे कि मैं राधास्वामी मत का हूं और गुरू ने ही मंगवाया है, उसको अगर चंदा दे दिया तो तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा। इन गुरूओं

ने अपनी इज्जत का यूं ही तो नाश किया है। अकेले गुरूओं को भी क्या कहें, चेले लालची बन गए। उन्होंने मांगना शुरू कर दिया। इसीलिए कहता हूं कि भेष भिखारी लाखों बन गए हैं। उनमें तो वे भी फंस जाते हैं जिनको अपने बाप—दादा की गद्दी मिल गई है। वे कहते हैं कि गद्दी के धनी पहले मेरे दादा थे। उसके बाद मेरा बाप हो गया और अब मैं हो गया। आगे मेरा बेटा हो जाएगा। ये उससे बंध जाते हैं। उनमें भक्ति नहीं है। हजूर महाराज जी कहते हैं कि **अंशी गुरू से और वंशी गुरू से जीवों का उद्धार नहीं होगा। जीवों का उद्धार तो हंस गुरू से और संत गुरू से होगा। अब ये बता देता हूं अंशी-वंशी गुरू किसे कहते हैं? वंशी वंशावली के गुरू को कहते हैं। अंशी उसे कहते हैं कि पहले पड़ दादा था। फिर दादा गुरू बन गया। आगे पड़पौता बन गया। वहां गुरूवाई नहीं रही। वह तो घर की गद्दी बन गई। वह घर का राज है। अगर मेरी ये बातें गलत हैं तो संतों ने झूठी बातें क्यों कहीं? वे कहते हैं कि संत के घर में संत नही आ सकता है।** संत रास्ता अलग है और औलाद (संतान) रास्ता अलग है। संत की औलाद को प्रसाद बेशक कह दो। उसकी इज्जत करो। पर संत रास्ता अलग है। संत गर्भ में आता ही नहीं है। आप ये कहोगे कि वह कैसे नहीं आता है? आप बताओ—गर्भ में कौन आया? तुम दादू, पलटू को गर्भ में आए कहोगे। पर ये तो देहधारी थे और देह का नाम गुरू नहीं है। शब्द का ही नाम गुरू है। शब्द कभी भी गर्भ में नहीं आता है। शब्द अजर अमर है और शब्द सभी के अंदर गूंजता रहता है। जैसे पत्थर में आग होती है। इसी तरह शब्द सबके अंदर है। उस पत्थर की आग को चतुर आदमी ही प्रगट करता है। वह अपना काम ले लेता है। नहीं तो पत्थरों में सारा दिन ही सिर फोड़ते रहो, आग प्रगट नहीं कर सकते। सो वह नाम भी उसी वक्त प्रगट होता है

जब कोई काबिल महात्मा मिल जाता है और सही ढंग से अपने अंतर में उसकी तलाश करता है। ऐसे वह शब्द प्रगट कर लेता है। यह शब्द सर्व देशी भी है और एकदेशी भी है। कोई ये प्रश्न पूछ सकता है। शब्द को भी कोई सर्वदेशी कहता है? हां, यह सर्वदेशी है। परमात्मा जर्रे—जर्रे में रमा हुआ है पर जर्रे—जर्रे वाला काम नहीं देगा। तुम्हें काम एक देशी ही देगा। जब सतगुरू एक देशी होता है तभी काम लेता है। सो भक्त को उसे एक देशी बनाना पड़ता है। तभी एक देशी होकर वह काम करता है। कहते हैं—

जटा पटा सिर पर भार, साधु नहीं है जम की मार।

मेरा हाल भी देखा होगा। मेरे पास एक लंगोटी थी। बड़े—बड़े बाल थे और जंगल में नंगा घूमता था। एक बरोला (कुल्हड़) रखता था। नंग धडंग एक लंगोटी मात्र होती थी। जब सतगुरू की दया हो गई उस वक्त किसी ने मुझे बताया कि आप क्या करते हो? मैंने कहा—आप भी तो एक लंगोटी को लिए फिरते हो। उन्होंने कहा—मैं तो गिर गया पर आप न गिरो। अब जमाना बदल गया है। मैं तो किसी को धमका कर भी चला गया। आपसे कोई धमकाया भी नहीं जाएगा। ये कौन थे? (ऐसा कहने वाले) ये पुर गांव के महात्मा थे। मेरा और उनका बहुत प्यार था। वे १८ वर्ष तक मुनि भी रहे। एक ही लंगोटी रखते थे। उन्होंने मुझे कहा—आप इस तरह मत रहो।_उन्होंने बताया कि अगर इसी तरह रहने से मुक्ति होती हो तो ये गीदड़, कुत्ते भी नंगे घूमते हैं फिर तो इनकी भी मुक्ति हो जाती। मुक्ति तो भजन करने से ही होगी। मुक्ति तो परमात्मा की भक्ति पर ही हो सकती है। कहते हैं—

घर बैठे बनो फकीर,
मन मार सुरत को डाटो।
घर में रहो कमा कर खाओ।
पर धन पर तिरिया से नेह न लगाओ।।

सतगुरू की दया से मैं भी मुड़ आया। सो प्रेमियो! भेष भिखारी तो लाखों घूमते हैं। वे उसी में फंसे रह जाते हैं। जो उसे छोड़ कर परमार्थ में लग गया, उस रास्ते पर पड़ गया और अपना राह खोज लिया तो ठीक वह गया।

अब ये भी सुनो—कोई तो नर पशु है। किस के नर—पशु हैं? जो गुजर गए हैं, उनके नर पशु हैं। कोई तो शालिगराम की धोक मारता है। कोई नरसिंह भगवान की धोक मारता है। कोई दस अवतारों की, कोई ब्रह्मा, विष्णु और महेश की धोक मारता है। अगर उनसे ये पूछा जाए कि भाई अंतर में भी तो इनका कोई स्थान होगा और उन पर कितना विश्वास है तुम्हारा? विश्वास तो मिलता ही नहीं है। अगर विश्वास हो तो तो काम ही बन जाता। विश्वास का मैं खंडन नहीं करता हूं। विश्वास ही तो काम देता है। कोई नर पशु है, कोई गुरू पशु है। कैसे—

झूठे गुरू की टेक को तजत न कीजे बार।
द्वार न पावै शब्द का, भटकै बारम्बार।।

अब मानस चोला मिला हुआ है। अगर तुम झूठे गुरू की टेक में फंस गए, जिसे शब्द का ही पता नहीं है, तो लख चौरासी में फिर चक्कर काटना पड़ेगा। फिर जो खोटे कर्म तुम करोगे, तो वे तुम्हें भोगने पड़ेंगे। सो—

गुरू भी दुर्लभ, चेला भी दुर्लभ।
बड़े भाग से मेल मिलाई।।

मैंने गुरू के विषय में पहले भी कहा था कि जब पूर्ण सतगुरू मिल जाता है तो फिर किसी भी चीज की जरूरत नहीं रहती है। कोई—कोई तो गुरू पशु भी बन जाते हैं। अगर मैं भी अरमान साहब को दोनों हाथों अन्धा धुंध पकड़ कर बैठ गया तो गलत बात होगी। अरमान साहब को तो चोला छोड़ना पड़ा। उनके अन्दर जो शब्द था वही मेरा सतगुरू था। वह कभी नहीं गया है।

वह तो अब भी हाजिर है। पर मैं उनके शरीर की निंदा नहीं करता। उनके आगे तो मुझे झुकना ही पड़ेगा। उस शरीर में से ही तो शब्द मिला था। सो जो पूर्ण पुरुष सतगुरू होते हैं उनकी निंदा न सुनो और न निंदा करो। नहीं तो गिर जाओगे क्योंकि उनमें पूर्ण धार होती है। उस शब्द की कमाई करो। जो मैंने पहले तीन दोहे कबीर साहब के कहे हैं। यूं ही न बंधो। पता तो उसे किसी चीज का है ही नहीं और उस से बंध कर बैठ जाते हैं। मैं आपको बंधन की बातें बताता हूं। मैं बाघपुर जाया करता था। वहां हमारी एक दादी थी। मेरी भूआ ने कहा—मां तू गुरूमंत्र ले ले। महाराज जी वहां गए हुए थे। उसने कहा—बेटी! मैंने तो गुरू बना रखा है। उसने बताया—वो तूने देखा है न बेरी में, चमार जूती गांठता है, वह बहुत शब्द गाता है। उसको ही मैंने गुरू बनाया हुआ है। मैंने पूछा—कैसे बनाया था? उसने कहा—मैंने उससे कह दिया कि मैं तुझे गुरू बनाऊंगी, तू आ जाना। उसने कहा—ठीक है। वह आ गया। मैंने उसको सवा पांच सेर तो आटा दे दिया और सवा रुपया दे दिया और कुछ कपड़े दे दिए। ये देकर उसके पांव में मत्था टेक कर कह दिया—तू मेरा गुरू है। उसने कहा—ठीक है। अब आप बताओ, वह बंध गई कि नहीं? ऐसा कहा जाता है तो वे बेचारे बंध ही जाते हैं और उस जमाने को उस जगह को भूल जाते हैं। अगर सच्चा विश्वास और करणी रहणी हो तो सतगुरू दया करते हैं। वे जो नूरी गुरू है वे दया करते हैं वे शब्द स्वरूपी दया करते हैं। समझते हैं कि बेचारा भोला है। फिर उसको दूसरा जन्म आदमी का दिला देते हैं अगर वह सच्चा रह जाता है तो। यदि गिर गया या जो गिरा हुआ गुरू मिला तो वह गिर ही गया। सो मैं उनकी तसल्ली कराता हूं। महात्मा कहते हैं फिर उनको गुरू मिलता है और फिर उनका तीन जन्मों तक उद्धार होता है। इसीलिए भेष भिखारी लाखों होते हैं। आपने इन गुरू पशुओं को

भी देखा होगा। कोई वेद का पशु बन जाता है। कोई किसी और चीज का पशु बन गया और वे उनसे बंध कर बैठ जाते हैं। असली आदमी को तो विवेक विचार होता है।

वेद पशु, तिरिया पशु, गुरू पशु संसार।
माणस सोई जाणिए जिसको विवेक विचार।।

गुलाबदास जी महाराज ने बड़ी भारी विवेक की बातें कही हैं। वे बड़े अच्छे महात्मा थे। उन्होंने कहा—जिसे विवेक का ही पता नहीं है तो वह क्या करेगा। विवेक सच्चाई को समझने का ही नाम है। जो विवेक को समझ गया उसका तो जीवन ही सफल हो गया। सो मानस **जां को मानिए जां को विवेक विचार,** अर्थात् सत और असत का निर्णय कर दे। आगे कहते हैं—

कहे कबीर सुनो भाई साधो, बैल से बच के रहना।

सो जितने भी बैल बताए हैं इनमें बचकर रहना चाहिए, क्योंकि कबीर साहब कहते हैं कि इनसे फसोंगे तो लठ बजेगा, झगड़ा होगा। सो ये तो झगड़े की जड़ है। इनसे बच कर ही रहना अच्छा है। अपना काम कर लो।

मूर्ख का मुख बाम्बी निकसै वचन भुजंग।
ता की औषध मौन है, विष न व्यापै अंग।।

अगर तुम मानते हो तो एक शब्द मेरी मदद किया करता है। वह उन्हें सुना दूं। जब मेरी छोटी उम्र थी और किसी बात पर घबरा जाता था तो मैं गोरखनाथ जी का शब्द गाया करता था। उस शब्द ने मेरी भी मदद की, तो तुम्हारी भी मदद करेगा।

नमो—नमो सतपुरुष को नमस्कार गुरू कीन्ह।
सुर नर मुनिजन साधवां संतां सर्वस दीन्ह।।

गुरू की महिमा क्या कहूं, साख भरैं। सैं वेद।
बिन सतगुरू नहीं पाइए अगम पंथ का भेद।।
टिका रह टिका रह, मत हो डावां डोल।
डिगे की कौड़ी नहीं, टिके के लाखों मोल।।
तू बांध कमर क्यों डरता है।
फिर देख खुदा क्या करता है।।

गोरखनाथ जी का शब्द है—

जहां से आई वहां जाओ हे ज्वाला, हम जागां जग सूता जी।
शक्ति गोरख छलने को आई, बहुत किया उत्पाता जी।
गोरख यती डिगा न डिगाया, गुरू ज्ञान मदमाता जी।
ऊठत मारूं, बैठत मारूं, मारूं जागत सूता जी।
तीन लोक में मेरा पसारा, तू कित जागा अवधूता जी।
ऊठत सुमरूं बैठत सुमरूं, सुमरूं जागत सूता जी।
तीन लोक से न्यारा खेलूं, मैं जोगी अवधूता जी।
शरण मच्छंदर जती गोरख बोला भजन करा सोए छूटा जी।।

जब मेरा विचार खराब होता है तो ये वाणी मेरी मदद किया करती है। सब का विचार हर वक्त एक जैसा नहीं रहता। सारे संत भी हर वक्त सतलोक में नहीं रहते हैं। सतलोक में हर वक्त रहने से शरीर का ढांचा ही बिगड़ जाता है। तो जब मन डिगता और रौला बाधा हो जाता है, माया छलने के लिए आती है तो कबीर साहब कहते हैं कि जहां से आई है वहीं जा बावली। हमारे पास क्या लेगी? हम तो जागते हैं। जो जागता रहता है उसके चोर नहीं लग सकते। हम तो चोर पकड़े बैठे हैं जो अन्दर ही है। फिर वह कहती है—

ऊठत मारू, बैठत मारूं और मारू जागत सूता।
तीन लोक में मेरा पसारा, तू कित जागा अवधूता।।

कबीर साहब ने कहा—

ठगनी! क्या नैनां झमकावै, तेरे कबीरा हाथ नहीं आवै।

फिर एक वाणी कही है कबीर साहब ने—

चाली जा हे मार्ग अपने को।
तू ठगनी ठगने चाली ठगने आई मोय,
हम ठगिये राम नाम के बेच खाएंगे तोय।

इसी तरह से गोरखनाथ जी जब माया कहती है—

ऊठत मारू, बैठत मारूं और मारूं जागत सूता।
तीन लोक में मेरा पसारा, तू कित जागा अवधूता।।

गोरखनाथ जी जवाब देते हैं—

ऊठत सुमरूं, बैठत सुमरूं, सुमरूं जागत सूता।
तीन लोक से न्यारा खेलूं, मैं योगी अवधूता।।

उस गुरू के बख्शे हुए नाम को इस तरह से सुमरो। किसी समय भी न भूलो, वे यही कहते हैं कि ऐ पगली ! मैं तीन लोक से न्यारा खेलता हूं। मैं योगी अवधूत हूं। फिर वह कहती है, अरे भले महात्मा ! मैं त्यागी के संग लागी डोलती हूं और लोभी बना कर लूटती हूं। छाया को जब तुम छोड़ कर भागोगे तो छाया तुम्हारे पीछे—पीछे भागती हुई चलेगी और अगर उसी छाया को पकड़ने के लिए उसके पीछे—पीछे दौड़ोगे तो ये हाथ नहीं आएगी। इसे ठुकरा कर चल दोगे तो ये तुम्हारे पीछे—पीछे चलेगी। मैं सच्ची बातें कहता हूं। मेरे सत्संगी जानते हैं। मैंने तो आज तक किसी को नहीं कहा कि इतनी चीजें दे दो। मांग—मांग कर मर जाते हैं उनका फिर भी पेट नहीं भरता है। मैंने तो किसी से कुछ नही कहा। क्यों नहीं कहा? मेरे गुरू का करवाया प्रण था। सो ही गोरखनाथ जी की वाणी ने भी सिद्ध कर दिया—

त्यागी के संग लागी डोलूं, लोभी कर—कर लूटा जी।
शरण मच्छन्दर जाति गोरख बोले भजन करा सोए छूटा जी।।

जो भजन करता है, वही छुट जाता है, काम माया से और नहीं छुटता। हम तो बल्कि काल से बचने की कोई कोशिश नहीं करते। बल्कि हम तो आदमियों को फंसाने की ही कोशिश करते हैं। ऐसा न हो कि फंसी हुई मुर्गी कहीं बाहर चली जाए। इन गुरूओं का ये हाल है। इस गुरूडम में मत फंसो। मेरे पास अगर शांति नहीं आती है तो फिर कहीं शांतिवाले के पास जाओ। मैं कोई संत सतगुरू नहीं हूं। मैं तो गुरू की डियूटी बजाने के लिए ही एक रास्ता बताता हूं। मैं ये भी नहीं कहता हूं कि मेरे ही पीछे लगे रहो। नहीं ये गलत बात है। जहां शांति मिलती है, वहां जाओ। पर मैं ये बात जरूर कहता हूं कि जो महात्मा शिष्यों की कमाई खाता है वह कभी भी नहीं तिरेगा। दूसरे, जो लड़कियों को पास रखता है और पांव दबवाता है वह भी कभी नहीं तिरेगा और न तिरने देगा। फिर और बहुत बातें रह जाती है। चाहे कितना ही पैसा आए गुरू उसको बरबाद नहीं करते हैं उसको दरबार में लगा देते हैं। उनके पास जो धन है वह अपनी कमाई का ही है और उनको खाने पीने की भी जरूरत नहीं है। उन्हें ओढ़ने पहनने की भी जरूरत नहीं है। उन्हें तो एक ही जरूरत है कि उनकी अपनी इज्जत बनी रहे। उनका शरीर और विचार पवित्र रहें। संत तो यही विचार रखते हैं। न वे किसी के शत्रु हैं न मित्र हैं।

संतों की बात है गहरी, न हमारा कोई मीत है न बैरी।

सो मैंने आपको थोड़ी देर सत्संग दे दिया। मैं आप लोगों को अपने से बड़े और अपना गुरू मानता हूं क्योंकि तुम्हारे से ही मेरा भ्रम दूर हुआ है। जो अपनी मर्जी से सत्संग करता है वह गिर जाता है।

गुरू बढ़ाए सब बढ़े बलकर बढ़ा न कोय।
बलकर हिणाकुश रावण बढ़े जड़ा मूल से दिए खोय।।

काफी ऐसे भी देखे हैं जो अपनी मर्जी से सत्संग करते हैं। वे गिर जाते हैं। भाई पीरे मुंगा और विनोबा जी की डियूटी यहां पर है। इनका बड़ा भारी काम है। इनका बड़ा भारी ऋणी हूं। पीरे मुंगा जी महाराज शिवब्रत लाल की पुस्तकें जो उर्दू की हैं, वे हिन्दी में लिखते हैं और यही बात है कि हिन्दी की पुस्तकें छप रही हैं। राधास्वामी योग छः भाग। कबीर योग 17 भाग। इनमें कुछ भाग उर्दू में हैं। कुछ हिन्दी में हैं। नानक योग के तीन भाग हैं। ऐसे ही एक अरमान रामायण काफी है दस अवतारों की कथा, सप्तऋषियों की कथा छप चुकी हैं। ये कथाएं तो ऐसी हैं कि उनको बाहर कथा बताकर उसको अन्तर में भी घटाया गया है। उससे पता लगता है कि अंतर क्या है और यही मेरे दाता कहा करते थे—बेटा! किसी का खंडन न करना। सभी मंडन योग्य हैं, किसी का भी खंडन क्यों करें? मधुमक्खी बनो। बिष्टे की मक्खी मत बनो। पर जो बातें मैंने सच्ची कही हैं उन सच्ची बातों को भी खंडन समझते हो तो तुम्हारी मर्जी है। सच्ची बात तो खंडन में नहीं आती है। जैसे यह कोई कह दे कि राम और कष्ण आदि दस अवतार हुए हैं और ये अपने—अपने कर्म ही भोगने के लिए आए थे। मुक्ति तो और ही किसी के हाथ में है। ब्रह्मा और विष्णु के हाथ में मुक्ति नहीं है। इनको भी माता अनुसूया ने छः—छः मास के बना दिये थे। उसने भी किसी का ध्यान किया और फिर अपने पति को ही बड़ा माना। सो वह कर्ता तो और ही कोई है—

ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर कहिए, इन सिर लागी काई।
इनके भरोसे कोई मत रहियो, इन्हू न मुक्ति पाई।।
दस अवतार निरंजन कहिए, से अपना न होई।
ये तो अपनी करणी भोगैं कर्ता और ही कोई।।

कर्ता धर्ता तो और ही कोई है। ये सब तो अपनी—अपनी करणी भोगने के लिए ही आते हैं। मैंने ये कोई गलत बातें नहीं

कहीं और न मैंने किसी का खंडन किया। मैं बात चलाता हूं कि एक मुक्ति अनादि है और एक मियादी है। सो ये तो मियादी और अनादि की बातें हैं। अनादि को ही असल में मुक्ति कहते हैं। मियादी है उसको स्वर्ग—वैकुंठ भी कह देते हैं। इतनी ही बात है। पर इन झमेलों में मत पड़ो। जब नाम मिल गया है तो कमाई करने की कोशिश करो और शांति को प्रगट करो। मैंने अपनी मर्जी से कोई काम नहीं किया है। मेरे गुरू की दया से ही सत्संग करता हूं। मेरे गुरू की दया से ही सब काम करता हूं। फिर जो सतगुरू को आगे लेकर नहीं चलते हैं, वे गिर जाते हैं। कई कह देते हैं कि गुरू बनने के लिए ही तो गुरू की बड़ाई करते हैं। अरे! बेशर्म, तुझे पता ही नहीं है गुरू की महिमा का। गुरू की महिमा को जो समझ गया वह तो गुरू को निश्चय ही आगे लेगा। जो पतिव्रता है वह तो अपने पति को आगे लेकर चलेगी। सो सतगुरू तो सतगुरू ही होता है। इसकी भारी महिमा है। उसको ही आगे लेकर चलने का ही अधिकार होता है और धर्म होता है। मैं तो आप लोगों का सेवक हूं। ये सेवकाई निभ जाएगी तो अच्छा है। ना तो उसकी मर्जी है जो कुछ भी वह करेगा देखी जाएगी। मुझे तो किसी भी चीज की जरूरत नहीं है। मुझे तो एक ही चीज की जरूरत है कि हे दाता! तेरी डियूटी पूरी हो जाए। मेरे सिर पर भार था। गुरू तो कोई अपने बेटों के लिए काम करते हैं और कोई धी—जंवाईयों के लिए। मेरा तो सारा परिवार ही मेरे बेटे—भाई हैं। मैं सब का ही बेटा हूं और सभी मेरे बेटे हैं। ये सब परिवार सबका सब मेरा ही है।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दु

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी–2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें। कोशिश करें कि तन्दुरूस्त आदमी ही आएं

अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	बनवासा	13 अक्टूबर – 19 अक्टूबर
2	गोहाना	20 अक्टूबर – 26 अक्टूबर
3	कैथल	27 अक्टूबर – 2 नवम्बर
4	इस्माइलपुर	3 नवम्बर – 9 नवम्बर
5	कोसली	10 नवम्बर – 16 नवम्बर
6	लालपुर	17 नवम्बर – 23 नवम्बर

गुरु की सेवा भाग-2

महर्षि शिवव्रत लाल जी

पिछले अंक में गुरु की बाह्य सेवा के बारे में लिखा था। गुरु की सेवा कानों से गुरु के शब्द या वचनों को ध्यानपूर्वक सुनो ताकि यह शब्द उनकी जिभ्या से निकल कर तुम्हारे हृदय में नया जन्म ले। एक ही शब्द कानों के रास्ते प्रवेश होकर दूसरे के हृदय में जन्म धारण करता है। गुरु के वचनों को विश्वास और शिष्टाचार के साथ सुनो ताकि ज्यों का त्यों उसका प्रभाव तुम्हारे अन्दर आ जाये। यदि विश्वास और श्रद्धा के साथ नहीं सुना तो इससे लाभ ही क्या हुआ? यह कान की सेवा है।

गुरु के हाथ पांव दबाओ। पंखा झलो। यह हाथ की सेवा है। गुरु के रुप का आंखों से टकटकी बांधकर दर्शन करो। ताकि वही रुप तुम्हारे हृदय में बैठ जाये। गुरु के ध्यान को पक्का करने के लिये गुरु का बार–बार दर्शन करना अनिवार्य है। यह आंखों की सेवा है।

चरणामत, मुखामत लेना रसना की सेवा है। पानी में यह गुण है कि वह बिजली के प्रभाव को तुरन्त अपने अन्दर ले लेता है। हाथ, पांव और जिभ्या के विशेष प्रकार का प्रभाव रहता है। तीनों से ही धार के रुप में यह प्रभाव जारी रहता है। किसी बैचेन आदमी के सिर पर हाथ फेरो, उसे आराम मिलेगा क्योंकि तुम्हारी अंगुलियों के पोरुओं से एक प्रकार का सूक्ष्म मादा निकलता रहता है जो दिखाई नहीं देता, लेकिन वह कभी अपने विशेष प्रभाव से खाली नहीं है।

अनमोल वचन

- पूरा पूरा परिश्रम करो और परिश्रम के क्रम में वह आप ही तुमको अपना रुप दिखाई देने लगेगा और तुम्हारा जीवन सफल हा जायेगा। – *महर्षि शिवव्रत लाल जी*
- जो पूर्ण साधना करे सोई पूर्ण साधु है, केवल रंगे हुए कपड़े पहनने वाले का नाम साधु नहीं हो सकता। – *कबीर साहब*
- मनुष्य को चाहिये कि परमात्मा को सभी जीवों में एक समान निवास करता हुआ मानें। यही परमात्मा की सच्ची पूजा है। – *गुरु नानक देव जी*
- मन में पशुओं के प्रति दया और करुणा के भाव रखो। जो पशु-पक्षियों की हत्या करता है, वह निर्दयी है, चाण्डाल है। – *भगवान बुद्ध*
- जानवरों को बांधाना, दुख पहुंचाना, मारना और उन पर बहुत भार लादना भी महापाप गिना जाता है। – *भगवान महाबीर*

ज्ञान-सार

- चरित्र ही मनुष्य का जीवन है और परमात्मा-प्राप्ति का साधान भी।
- चिन्ता के लायक संसार में कोई चीज नहीं।
- सब भगवान से ही उत्पन्न है और सबमें उनकी ही शक्ति है।
- दुष्टों की न शत्रुता अच्छी न मित्रता।
- मन्दिर तोड़ने से अधिक बुरा है किसी का दिल तोड़ना।

स्वास्थ्य स्तम्भ

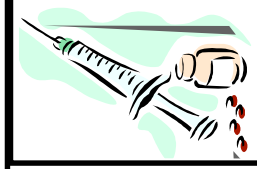

श्वेत प्रदर (LEUCORRHOEA)

भुने हुए मूंग के आटे के लड्डू: मूंग एक किलो लेकर चने की तरह भाड़ में भुनवा लें और फिर भुने हुए छिल्के सहित मूंग का आटा पिसवा लें। इस आटे में अन्दाज से देशी घी और बूरा मिलाकर सौ–सौ ग्राम के लड्डू बनाकर रख लें। एक लड्डू रोजाना सुबह खाली पेट लगातार सात दिन खायें।

२. आंवला तथा मिश्री का चूर्ण :

सूखे आंवले (गुठली रहित) तथा मिश्री को अलग–अलग बारिक कूट–पीसकर समभाग मिलाकर चूर्ण बना लें। प्रातः–सायं खाली पेट एक चम्मच भर चूर्ण दोनों समय पानी के साथ दस–पन्द्रह दिन लेने से श्वेतप्रदर दूर हो जाता है तथा योनी की खराश का भी नाश हो जाता है।

श्वेत प्रदर के अलावा **पुरुषों के शुक्रमेह (मूत्र के आगे-पीछे वीर्य टपकना या पेशाब में धातु जाने का रोग) स्वपन दोष, हृदय की धड़कनें, रक्त में कोलेस्ट्रोल बढ़ जाना, कब्ज, असामयिक वद्धावस्था** आदि रोगों में भी लाभप्रद है।

स्वपनदोष में यह मिश्री युक्त आंवला चूर्ण रात्री में सोने से आधा घंटे पहले रोजाना एक चम्मच पानी के साथ लें। आंवला चूर्ण बनाने का आसान तरीका यह भी है कि हरे आंवलों को कद्दूकस कर धूप में सुखा लें और फिर मिक्सी में डालकर चूर्ण बना ले।

पुस्तक "स्वदेशी चिकित्सा सार" -डा. अजीत मेहता "आयुर्वेद रत्न"

lRlax&lkj

चौथे लोक के धणी राम अथवा सतगुरु या उस राधास्वामी दयाल ने जीवों के कल्याण के लिए सन्त प्रकट कर दिए हैं और सन्तों ने यह दिखा भी दिया है कि उनके नाम में वह शक्ति है जो असहाय जीव को विषय–विकारों या अन्य ऐबों से छुटवा कर उसको सत्य व पवित्र बना कर उसको अपने सब से बड़े दुख जन्म–मरण सहित सभी दुखों से छुटवा कर, उसे अनादि मुक्ति दिलवा दे। ऐसी पवित्रता पत्थर–पानी अथवा देवी–देवताओं की पूजा से तो नहीं आ सकती है। इसी कारण से लोग इनकी पूजाओं को छोड़ कर सन्तों से नाम लेने लगे हैं। अतः देवी–देवताओं की पूजा–दक्षिणा भी बन्द होने लगी तो देवी–देवता अपनी फरियाद लेकर उस राम के पास पहुँच गए। यह वाणी भी आती है कि–देवी देवता कहैं राम से कि हमने ठौड़ बता।

हम कहां जाये अब? आपने संत ऐसे पैदा कर दिये कि हमारी हर किसी चीज का ये खंडन करके कहते हैं कि इनमें सच्चाई नहीं है। इसलिए निज नाम को खोजो, मुक्ति उसी से मिलेगी।

तब उन देवी देवताओं को उत्तर मिला कि–

जो हम से बेमुख हैं, उनको तू लूट और खा।

यह निश्चित है कि उस परमपद व परमात्मा की प्राप्ति के लिये तो जीव को इन क्रियाओं से ऊपर उठना होगा। लोग चक्की–पानी को भी पूजते हैं। मंगलवार, शुक्रवार आदि के व्रत करते हैं, अमावस धौंकते हैं, पीपल पूजते हैं, तुलसी के पौधे की पूजा और उसका ब्याह भी करते हैं। भागवत, रामायण, गीता आदि का पाठ करते हैं, उनको कण्ठस्थ भी कर लेते हैं। हरिद्वार जाते हैं। कबीर आदि सन्तों की वाणियों का गायन भी करते हैं। इनसे तो उनके मन में कोई परिवर्तन नहीं आता। अब जीव के सामने दो ही विकल्प हैं। चाहे वह इन क्रियाओं को कर ले अथवा वह सन्तों के नाम की शरण ग्रहण कर ले। अब यह तो एक स्वाभाविक सी बात है जो ज्यादा अच्छी चीज होगी, जीव तो उसी को अपनाएगा जैसे–किसी छोटे बच्चे के एक हाथ की मुट्ठी में गुड़ की डली है। वह उसे खाकर उसका आनन्द ले रहा है। यदि कोई भी आदमी उसके दूसरे हाथ में लड्डू दे देगा तो कुदरती ही बच्चे की गुड़ वाली मुट्ठी ढीली हो जाएगी और गुड़ नीचे गिर जाएगा और वह लड्डू का मजा लेने लगेगा। इसी प्रकार सन्तों के नाम

की शरण में पहुँचते ही जीव स्वतः अपनी उक्त अन्य सभी क्रियाओं को छोड़ देता है, अन्यथा सन्त तो किसी भी धार्मिक क्रिया को नहीं छुड़वाते हैं। ऐसा खण्डन करने का उनका कोई इतिहास ही नहीं है। पर वे सच्चाई बताते हैं कि जो दो गाड़ियों में पाँव रखता है वह पार नहीं उतर सकता है। एक को ही अपनाना पड़ेगा। एक में तुम बैठोगे तो वह गाड़ी जहाँ भी जाएगी, तुम्हें अपनी मंजिल पर ले जाएगी।

नाम के अभ्यासी के मन में भी पवित्रता व सच्चाई उसी समय आएगी, जब वह पूरा प्रयत्न करके उनके बताए नियमों पर चलकर ध्यान–अभ्यास करेगा। सन्त नाम की दीक्षा देते समय प्रथम नेम तो यही करवाते हैं कि अभ्यासी अपनी मेहनत से कमाया पवित्र और शुद्ध अन्न खाए। जब वह पवित्र शुद्ध अन्न खाएगा तो उसका मन अपने आप ही पवित्र होगा और उसके अन्नमय–मनमय, ज्ञान–विज्ञान और आनन्द के सभी कोष स्थायी रूप में पवित्र होते चले जाएँगे। बल्कि यदि भजन नहीं बनता है तो सच्चे अभ्यासी को ध्यान न लगने पर पता चल जाता है कि आज कोई गलत अन्न खा लिया है।

जहां गुरुमुख का संग विचारों की पवित्रता को दढ़ करता है, उनके संग से भजन में वद्धि होगी, वहीं मनमुख का संग विचारों को इतनी तीव्रता से गिरा देता है कि स्वयं सन्तों के सत्संग तक करवाने वाले आध्यात्मिकता की कुछ उँचाई प्राप्त करने वाले जीव भी मनमुखों के संग से पतन को प्राप्त हो जाते हैं। उनके पास बैठने से जो थोड़ा बहुत भजन उनका बनता है, तो वह भी खत्म हो जाता है। इसीलिए कहते हैं कि–

गुरु माथे से उतरे शब्द बिहूना होय।
ता को काल घसीटसी रोक न सके कोय।।

सतगुरु कृपा

संत सहज में ही बहुत गहरी बातें कह देते हैं तथा साधारण मनुष्य ही नहीं बहुत से सत्संगी भी सन्तों की बात की ओर विशेष ध्यान नहीं देते हैं अथवा उनको विश्वास ही नहीं हो पाता है। अतः वे भी खाली ही रह जाते हैं। जैसे–हुजूर महाराज जी तो इस दोहे को बार–बार दोहराते ही रहते हैं कि–

सन्तों के दर्शन से आई टलै बला।
जो दण्ड सूली का, कांटे में टल जाह।।

इस बारे में हुजूर अनेक उदाहरण भी देकर इस बात को समझाते हैं। बड़े हजूर महाराज जी ने अनेक सत्संगों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख भी किया है कि आप लोगों पर जब भी कोई आफत आती है तो दिनोद भागने की जरूरत नहीं है। आप अपने सतगुरु के स्वरूप को सामने रखकर प्रार्थना कर लो। आप की आफत का समाधान हो जाएगा अथवा आपके प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। उन्होंने इस बात को स्वयं का उदाहरण देकर भी इसे और पूर्णतया स्पष्ट किया है। जब उनके आश्रम से एक कार और उसमें रखे गहने कोई उड़ा ले गया तो उन्होंने स्वयं ने अपने गुरु के स्वरूप के सामने विनती की और थोड़ी ही देर में उन्हें उत्तर मिल गया कि सब ठीक हो जाएगा। चिन्ता मत करो। (देखो अनमोल चरित्र)

एक बहन के ऊपर की गई इसी प्रकार की सदगुरु कपा के बारे में पत्र प्राप्त हुआ है।

भाई रामकरण पुत्र श्री सूरत सिंह गांव/डा. बनवासा से लिखते हैं कि–मैं अपनी पत्नी के स्त्री रोग से गम्भीर रूप से पीड़ित होने के कारण भारी परेशान रहता था। उसको करनाल शहर में तीन स्त्री–रोग विशेषज्ञाओं को दिखाया, बड़े इलाज करवाये। इलाज करने के बाद अन्त में सभी ने कहा कि आप्रेशन

होगा। परन्तु आप्रेशन से धर्मपत्नी अत्यन्त भयभीत होती थी। उसकी बीमारी ने सन् २००१ में ही गम्भीर रूप धारण कर लिया था। दुखी होकर मैं पी. जी. आई. अस्पताल, चण्डीगढ़ में ले गया वहां भी डाक्टरों ने ऑप्रेशन की सलाह दे दी। आखिर में आप्रेशन की तारीख भी तय कर दी गई।

इसी समय एक दिन वह अपनी चारपाई पर लेटी हुई थी। उसने लेटे–लेटे ही महाराज जी के स्वरूप की ओर ध्यान लगाकर इस सम्बन्ध में विनती की। हुजूर महाराज जी प्रगट हो गए और उन्होंने कहा–घबराने की जरूरत नहीं है। मेरा आशीर्वाद है, तू बिना आप्रेशन ही ठीक हो जाएगी। परिणाम यह हुआ कि आप्रेशन नहीं हुआ और उस दिन के बाद स्वतः ही बीमारी ठीक होती चली गई। खुशी की बात यह है कि वह आज पूर्णतया स्वस्थ है। अतः

दर्शन कीजे सन्त के, दिन में कई-२ बार।
आसौजां के मेंह ज्यूं, खूब करैं उपकार।।

नोट :

सतगुरु कपा के बहुत पत्र कार्यालय में प्राप्त हो रहे हैं। परन्तु उन पत्रों में घटनाओं का पूरा ब्यौरा और विशेषकर उनमें अस्पतालों में आने–जाने तथा अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तारीखें नहीं दी होती हैं। इसी कारण से वे घटनाए प्रकाशित नहीं हो पाती है। अतः सभी बहनों, भाइयों से प्रार्थना हैं कि सतगुरु–कपा की घटनाएं लिखते समय महत्त्वपूर्ण तिथियां व टेलीफोन नं. अवश्य लिखें तथा अपने नामदान लेने की तिथि यदि याद नहीं है तो मास या वर्ष अवश्य देवें।

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।